सान्ध्य हिन्दी दैनिक

जौनपुर से प्रकाशित

देश की उपासना

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

वर्ष - 03 | अंक - 20 | जौनपुर, शुक्रवार, 06 सितम्बर 2024 | सान्ध्य दैनिक (संस्करण) | पेज - 4 | मूल्य - 2 रूपये

संक्षिप्त खबरें

महाकुंभ के लिए रोडवेज चलाएगा सात हजार बसें

लखनऊ, संवाददाता। प्रयागराज महाकुंभ के मद्देनजर बृहस्पतिवार को परिवहन निगम मुख्यालय में बसों के संचालन को लेकर बैठक हुई। निगम के प्रवक्ता अजीत कुमार सिंह ने बताया कि मेले के लिए परिवहन निगम सात हजार बसें चलाएगा। 550 शटल बसें भी चलाई जाएंगी। इसमें 200 सिटी बसें व 350 निगम की बसें लोकल रूट पर चलेंगी। अपर प्रबंध निदेशक ने सभी क्षेत्रीय प्रबंधकों के साथ बैठक कर तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने बताया कि महाकुंभ मेले को तीन चरणों में बांटकर कार्ययोजना बनाई गई है। पहला चरण 12 से 23 जनवरी, दूसरा 24 जनवरी से सात फरवरी तथा तीसरा चरण 8 से 27 फरवरी के बीच रहेगा। मुख्य स्नान 13, 14, 29 जनवरी और 3 व 26 फरवरी को है। अस्थायी बस स्टेशनों से बसों के संचालन के लिए क्षेत्रीय प्रबंधक तैनात किए जाएंगे। ये अस्थायी बस स्टेशन आठ चिह्नित स्थानों पर बनाए जाएंगे। लखनऊ, अयोध्या, कानपुर, गोरखपुर, वाराणसी, मिर्जापुर, बांदा रूट पर चेकपोस्ट भी बनेगी। मुख्यालय पर एक सेंट्रल कंट्रोल रूम की स्थापना होगी। क्षेत्रीय एवं केंद्रीय कंट्रोल रूम प्रयागराज में तैनात अधिकारी सीसीटीवी एवं वॉकी टॉकी के जरिये बस स्टेशनों पर भीड़ पर निगरानी रखेंगे।

सनातन ही दुनिया का एकमात्र धर्म - सीएम

अयोध्या, संवाददाता। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गुरुवार को अयोध्या में सिंघल फाउंडेशन के बैनर तले आयोजित भारतात्मा अशोक सिंघल वेद पुरस्कार– 2024 के पुरस्कार वितरण समारोह में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि देश और सनातन धर्म के लिए अब हमें अपने अधिकारों की चिंता कम और नागरिक कर्तव्यों के विषय में ज्यादा चिंतन करना होगा। सनातन ही दुनिया का एकमात्र धर्म है। सनातन धर्म सुरक्षित एवं समृद्धि के पथ पर अग्रसर रहेगा तो विश्व मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा। अगर सनातन धर्म खतरे में पड़ेगा तो विश्व मानवता का जीवन खतरे में पड़ जाएगा। अशोक सिंघल ने काशी हिंदू विश्विद्यालय से इंजीनियरिंग की डिग्री ली थी, लेकिन उनका जीवन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक प्रचारक के रुप में सनातन धर्म के लिए समर्पित था। सीएम योगी ने कहा कि श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन और अशोक सिंघल एक–दूसरे के पूरक थे। उनके पास सोते, जागते, उठते, बैठते सिर्फ एक ही कार्य था, श्रीराम जन्मभूमि की प्राप्ति। उसके लिए वो शांति और क्रांति दोनों मार्गों को अपनाने को आतुर रहते थे। श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन में उनके योगदान का प्रतिफल है कि 22 जनवरी 2024 के दिन इस सदी की सबसे उत्कृष्ट घटना घटी। इस दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कर कमलों से भव्य मंदिर में प्रभु श्रीरामलला विराजमान हुए। साधना जब सच्ची होती है तो परिणाम प्राप्त होता ही है। सीएम योगी ने कहा कि अछूतोद्धार के लिए अशोक सिंघल के प्रयास अतुलनीय हैं। उनके द्वारा स्थापित वेद विद्यालय और एकल विद्यालय भी श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन का हिस्सा थे। श्वेदो अखिलो धर्म मूलम्श यानी अखिल विश्व के धर्म का अगर कोई मूल है तो वेद हैं। अशोक सिंघल ने वेदों के इस महत्व को अपने जीवन में अक्षरशः उतारने का कार्य किया था। गोरक्षक सुंदर यादव की आजमगढ़ में गोतस्करों ने हत्या कर दी थी। उस हत्या के खिलाफ आंदोलन हुआ था, जिसका अशोक सिंघल नेतृत्व कर रहे थे। इसी का परिणाम रहा कि गोरक्षक सुंदर यादव के हत्यारे जेल गए। सीएम योगी ने कहा कि भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा यानी भारत की प्रतिष्ठा संस्कृत और संस्कृति में हो सकती है।

यही भारत की आत्मा है और यही विश्व की आत्मा हो सकती है। दुनिया आज शांति, सुरक्षा और सौहार्द के लिए भारत की तरफ आशा भरी निगाहों से देखती है। पूरी दुनिया में आज कोई भी घटना घटित होती है तो दुनिया की निगाह भारत के नेतृत्व की तरफ होती है।

केजरीवाल सरकार शिक्षा में क्रांति लेकर आई – आतिशी

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली की शिक्षा मंत्री आतिशी ने बृहस्पतिवार को कहा कि अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली सरकार एकमात्र ऐसी सरकार है जो मंत्रियों और अधिकारियों के बजाय प्रधानाचार्यों और शिक्षकों को उन्नत प्रशिक्षण के लिए विदेश भेजने को प्राथमिकता देती है। आतिशी ने कहा, "यह केजरीवाल सरकार द्वारा लाई गई शिक्षा क्रांति है।" शिक्षक दिवस पर दिल्ली राज्य शिक्षक पुरस्कार समारोह में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए आतिशी ने कहा कि केजरीवाल सरकार एकमात्र ऐसी सरकार है जो मंत्रियों और अधिकारियों के बजाय प्रधानाचार्यों और शिक्षकों को प्रशिक्षण के लिए विदेश भेजती है। उन्होंने बताया कि 400 से अधिक प्रधानाचार्यों और शिक्षकों ने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त किया है, जबकि 950 शिक्षकों को सिंगापुर में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान और 1,700 शिक्षकों को आईआईएम अहमदाबाद में प्रशिक्षित किया गया है। अपनी पृष्ठभूमि का जिक्र करते हुए मंत्री ने कहा, "मेरे माता–पिता दोनों दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षक थे। मेरा इस पेशे से व्यक्तिगत जुड़ाव है और मैं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के महत्व को समझती हूं।

भारत ने हरित ऊर्जा के क्षेत्र में उठाए कई बड़े कदम – मोदी

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सौर महोत्सव कार्यक्रम को संबोधित किया। इस दौरान प्रधानमंत्री ने कहा कि पहले अंतर्राष्ट्रीय सौर महोत्सव में आप सभी का स्वागत करते हुए मुझे खुशी हो रही है। मैं इस अद्भुत पहल के लिए अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन को बधाई देता हूं। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि यह अंतर्राष्ट्रीय सौर महोत्सव सूर्य के प्रभाव का जश्न मनाने के लिए पूरी दुनिया को एक साथ लाता है। यह एक ऐसा त्योहार है जो हमें एक बेहतर ग्रह बनाने में मदद करेगा! नरेंद्र मोदी ने कहा कि 2015 में, ISA की शुरुआत एक छोटे पौधे के रूप में हुई। यह आशा और आकांक्षाओं का क्षण था। आज, यह नीति और कार्य को प्रेरित करने वाला एक विशाल वृक्ष बन रहा है। उन्होंने कहा कि इतने कम समय में ै। की सदस्यता 100 देशों के आंकड़े तक पहुंच गई है। इसके अतिरिक्त, 90 और देश पूर्ण सदस्यता प्राप्त करने के लिए रूपरेखा समझौते का अनुमोदन कर रहे हैं। इस संगठन का विकास एक विश्व, एक सूर्य, एक ग्रिडश के दृष्टिकोण के लिए महत्वपूर्ण है। मोदी ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में, भारत ने हरित ऊर्जा के क्षेत्र में कई बड़े कदम उठाए हैं। हम नवीकरणीय ऊर्जा में पेरिस प्रतिबद्धताओं को हासिल करने वाले पहले जी20 राष्ट्र थे। सौर ऊर्जा की उल्लेखनीय वृद्धि इसे संभव बनाने का एक प्रमुख कारण है। उन्होंने कहा कि पिछले 10 वर्षों में हमारी सौर ऊर्जा क्षमता 33 गुना बढ़ गई है। यह गति और पैमाना हमें 2030 तक 500 गीगावॉट गैर–जीवाश्म ईंधन क्षमता हासिल करने में भी मदद करेगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि सौर क्षेत्र में भारत की वृद्धि एक स्पष्ट दृष्टिकोण का परिणाम है।

सशस्त्र बलों को रहना चाहिए युद्ध के लिए तैयार – राजनाथ

लखनऊ, संवाददाता। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गुरुवार को कहा कि भारत एक शांतिप्रिय राष्ट्र है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि शांति बनाए रखने के लिए सशस्त्र बलों को युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए। शीर्ष स्तरीय सैन्य नेतृत्व बैठक के दूसरे और अंतिम दिन लखनऊ में पहले संयुक्त कमांडर सम्मेलन में बोलते हुए, सिंह ने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने और आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए, तीनों सेनाओं के बीच संयुक्तता और एकीकरण को आगे बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। सम्मेलन की थीम, सशक्त और सुरक्षित भारत सशस्त्र बलों में बदलाव के अनुरूप, सिंह ने संयुक्त सैन्य दृष्टि विकसित करने और भविष्य में होने वाले युद्धों में देश के सामने आने वाली चुनौतियों के लिए तैयारी करने के महत्व पर जोर दिया, साथ ही उकसावों के लिए समन्वित, त्वरित और आनुपातिक प्रतिक्रिया पर जोर दिया। रूस–यूक्रेन, इजराइल–हमास के बीच चल रहे संघर्षों और बांग्लादेश में मौजूदा अस्थिर स्थिति का जिक्र करते हुए, मंत्री ने कमांडरों से इन प्रकरणों का विश्लेषण करने, भविष्य में देश के सामने आने वाली समस्याओं की भविष्यवाणी करने और अप्रत्याशित से निपटने के लिए तैयार रहने का आह्वान किया। उन्होंने उत्तरी सीमा पर स्थिति और पड़ोसी देशों में हो रही घटनाओं के मद्देनजर शीर्ष सैन्य नेतृत्व द्वारा व्यापक और गहन विश्लेषण की आवश्यकता पर जोर दिया, जो क्षेत्र में शांति और स्थिरता के लिए चुनौती पैदा कर रहे हैं। सिंह ने कहा कि वैश्विक अस्थिरता के बावजूद, भारत एक दुर्लभ शांति लाभ का आनंद ले रहा है और यह शांति से विकास कर रहा है। हालांकि, चुनौतियों की बढ़ती संख्या के कारण, हमें सतर्क रहने की आवश्यकता है। यह महत्वपूर्ण है कि हम अमृत काल के दौरान अपनी शांति बरकरार रखें। हमें इसकी आवश्यकता है हमारे वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करें, वर्तमान में हमारे आसपास हो रही गतिविधियों पर नजर रखें और भविष्योन्मुखी होने पर ध्यान केंद्रित करें, इसके लिए हमारे पास एक मजबूत और मजबूत राष्ट्रीय सुरक्षा घटक होना चाहिए।

महाराष्ट्र में एम0एस0आर0टी0सी कर्मचारियों की हड़ताल हुई समाप्त

मुंबई, एजेंसी। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे द्वारा अप्रैल 2020 से पूर्वव्यापी प्रभाव से उनके मूल वेतन में 6,500 रुपये की वृद्धि करने की घोषणा के बाद महाराष्ट्र राज्य सड़क परिवहन निगम (एमएसआरटीसी) के कर्मचारियों की दो दिवसीय हड़ताल बुधवार देर शाम को समाप्त कर दी गई। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने अप्रैल 2020 से पूर्वव्यापी प्रभाव से एमएसआरटीसी कर्मचारियों के मूल वेतन में 6,500 रुपये की वृद्धि की है। इस निर्णय का कर्मचारियों की कार्रवाई समिति ने स्वागत किया, जिससे हड़ताल वापस ले ली गई। एमएस आरटीसी कर्मचारियों की एक कार्रवाई समिति ने फैसले का स्वागत किया। मुख्यमंत्री ने गणेश चतुर्थी के दौरान कर्मचारियों के हड़ताल पर जाने पर नाराजगी व्यक्त की, जिसके कारण सैकड़ों यात्रियों को असुविधा हुई। महाराष्ट्र में 11 ट्रेड यूनियनों की एक्शन कमेटी ने अपनी लंबित मांगों को लेकर मंगलवार को हड़ताल बुलाई। मुंबई के सह्याद्रि गेस्ट हाउस में एकनाथ शिंदे की अध्यक्षता में कर्मचारी यूनियनों की बैठक हुई. बैठक में उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस, उद्योग मंत्री उदय सामंत, विधायक सदाभाऊ खोत, गोपीचंद पडलकर और श्रमिक नेता हनुमंत ताठे सहित अन्य लोग शामिल हुए। यूनियनों की मांगों पर बीच का रास्ता निकालने के लिए एकनाथ शिंदे ने मूल वेतन 6,500 रुपये बढ़ाने के फैसले की घोषणा की। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने राज्य के डिपो में ड्राइवरों और वाहकों के लिए विश्राम गृहों की खराब स्थिति को दूर करने के लिए एक योजना तैयार करने का भी आदेश दिया।

भाजपा विधानसभा चुनाव के बाद झारखंड से हमेशा के लिए बाहर हो जायेगी - हेमंत

रांची, एजेंसी। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की आलोचना करते हुए उस पर अन्य दलों के विधायकों और सांसदों की "खरीद–फरोख्त" करने का आरोप लगाया। सोरेन ने दावा किया कि इस साल विधानसभा चुनाव के बाद भाजपा राज्य से हमेशा के लिए बाहर हो जायेगी। उन्होंने आरोप लगाया, "यदि लोग उन्हें (भाजपा) नकार भी दें तो भी वे विधायकों, सांसदों को अपने पाले में कर लेते हैं और सरकार बनाने के लिए विपक्षी नेताओं के खिलाफ ईडी और सीबीआई जैसी एजेंसियों का इस्तेमाल करते हैं या उन्हें जेल में डाल देते हैं। मुख्यमंत्री यहां 'आपकी योजना, आपकी सरकार आपके द्वार' कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने गुमला और लोहरदगा जिलों के लिए 1,000 करोड़ रुपये से अधिक की 347 परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। सोरेन ने कहा, "जैसे मछली पानी के बिना जीवित नहीं रह सकती, वैसे ही हमारा विपक्ष (भाजपा) भी सत्ता के बिना ऐसा ही महसूस करता है... वे पिछले दो सालों से मेरे और हमारे विधायकों के पीछे पड़े हैं। लेकिन, हम न तो बिकाऊ हैं और न ही डरे हुए हैं।" उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि जब झारखंड में भाजपा के "स्थानीय नेता विफल" हो गए, तो अब वह छत्तीसगढ़, असम, गुजरात और मध्य प्रदेश से नेताओं को "आयात" कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा, "ये नेता यहां विभिन्न समुदायों के बीच सांप्रदायिक तनाव भड़का रहे हैं।

सोरेन ने भाजपा पर अपनी सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा, "वे नहीं चाहते कि योजनाओं का लाभ लोगों तक पहुंचे। लेकिन, हमने तय किया है कि इस बार हम झारखंड से अपने विपक्ष को हमेशा के लिए बाहर कर देंगे।" राज्य में आबकारी कांस्टेबल की भर्ती के लिए शारीरिक परीक्षण के दौरान कुछ अभ्यर्थियों की मौत पर सोरेन ने कहा कि "दोषपूर्ण" कोविड टीके मौत का एक कारण हो सकते हैं। उन्होंने कहा, "झारखंड में लोगों को दिए गए कोविड टीके दोषपूर्ण थे। इसका असर मरने वाले युवाओं में देखा जा रहा है।" अधिकारियों ने बताया कि अब तक कुल 12 अभ्यर्थियों की मौत हो चुकी है। सोरेन ने कहा, "युवाओं की मौत के पीछे साजिश का संदेह है। मैंने इसकी जांच के आदेश दे दिए हैं।" इससे पहले भाजपा की झारखंड इकाई ने दावा किया था कि झामुमो नीत सरकार के कुप्रबंधन" के कारण अभ्यर्थियों की मौत हुई।

गृह मंत्री शाह से मिला विश्व हिन्दू परिषद का प्रतिनिधिमंडल

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में राजनीतिक उथल–पुथल के बीच बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे हमलों को लेकर विश्व हिंदू परिषद ने गुरुवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात की। विहिप के सदस्यों के साथ हिंदू संतों ने केंद्रीय मंत्री से मुलाकात की और उन्हें एक ज्ञापन सौंपा। बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमलों की खबरें कई हिंदू मंदिरों में बर्बरता के साथ सामने आईं क्योंकि देश में पूर्व प्रधान मंत्री शेख हसीना को हटाने के लिए राजनीतिक उथल–पुथल चल रही थी। भारत ने बांग्लादेशी हिंदुओं की सुरक्षा का मुद्दा उठाया है और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन के साथ यूक्रेन की स्थिति के साथ इस मुद्दे पर चर्चा की। मोदी ने कहा, हमने बांग्लादेश की स्थिति पर भी चर्चा की और सामान्य स्थिति की शीघ्र बहाली और बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों, विशेषकर हिंदुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। भारतीय जनता पार्टी के नेता स्वपन दासगुप्ता ने कहा कि भारत को बांग्लादेश में हिंदुओं को संकेत भेजना चाहिए कि उनका यहां हमेशा स्वागत है। हिमंत बिस्वा सरमा ने भारत में उनके प्रवास को प्राथमिकता देने के बजाय बांग्लादेश में हिंदुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने बांग्लादेश के भीतर हिंदू आबादी को सुरक्षित करने के महत्व पर प्रकाश डाला और पीएम नरेंद्र मोदी से उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बांग्लादेश सरकार के साथ जुड़ने का आग्रह किया।

तीसरी बार बीजेपी को वोट देगी जनता, बहुमत से सरकार बनाएंगे हम – सैनी

हरियाणा, एजेंसी। हरियाणा में सियासी पारा लगातार चढ़ता जा रहा है। भाजपा और कांग्रेस के बीच मुख्य मुकाबला है। इन सबके बीच हरियाणा के सीएम और भाजपा नेता नायब सिंह सैनी ने बड़ा दावा किया है। उन्होंने कहा कि हरियाणा की जनता तीसरी बार बीजेपी को वोट देगी और हम भारी बहुमत से सरकार बनाएंगे। राज्य में डबल इंजन की सरकार ने बड़े पैमाने पर काम किया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 2047 तक विकसित भारत का दृष्टिकोण है और मुझे हरियाणा के लोगों पर पूरा भरोसा है कि वे इस दृष्टिकोण का समर्थन करेंगे और इसे दृढ़ विश्वास के साथ आगे बढ़ाएंगे। नायब सिंह सैनी ने कहा कि हम लोगों के बीच जा रहे हैं और उन्हें काम के बारे में बता रहे हैं हमारी सरकार ने किया। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस और आप दोनों भ्रष्ट पार्टियां हैं। उनका एजेंडा हरियाणा की जनता के कल्याण के लिए काम करना नहीं है, उनका एजेंडा भ्रष्टाचार करना और अपनी जेबें भरना है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस खिलाड़ियों, युवाओं, किसानों और गरीबों के नाम पर राजनीति करती है, लेकिन उनके लिए कभी कुछ नहीं किया। यह सिर्फ उनका शोषण करता है।

चुनौतियों के बावजूद आरएसएस स्वयंसेवक मणिपुर में स्थिति सामान्य करने के लिए काम कर रहे - मोहन

पुणे, एजेंसी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि मणिपुर में चुनौतीपूर्ण स्थिति और सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं होने के बावजूद संगठन के स्वयंसेवक संघर्षग्रस्त पूर्वोत्तर राज्य में मजबूती से डटे हैं। भागवत शंकर दिनकर काणे (जिन्हें भैयाजी के नाम से भी जाना जाता है) की शताब्दी वर्ष के अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित कर थे। काणे ने मणिपुर में काम किया, 1971 तक बच्चों की शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया, छात्रों को महाराष्ट्र लाए और उनके रहने की व्यवस्था की थी। संघ प्रमुख ने कहा, "मणिपुर में स्थिति बहुत कठिन है। सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं है। स्थानीय लोग अपनी सुरक्षा को लेकर सशंकित हैं। जो लोग वहां व्यापार या सामाजिक कार्य के लिए गए हैं, उनके लिए स्थिति और भी चुनौतीपूर्ण है, लेकिन ऐसी परिस्थितियों में भी संघ के स्वयंसेवक मजबूती से तैनात हैं और दोनों गुटों की सेवा कर रहे हैं तथा स्थिति को शांत करने का प्रयास कर रहे हैं।" भागवत ने कहा कि संघ के स्वयंसेवक न तो उस राज्य से भागे हैं और न ही निष्क्रिय बैठे हैं, बल्कि वे वहां जीवन को सामान्य बनाने, दोनों समूहों के बीच क्रोध और द्वेष को कम करने तथा राष्ट्रीय एकता की भावना सुनिश्चित करने के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा, "एनजीओ सब कुछ नहीं संभाल सकते, लेकिन संघ अपनी ओर से हरसंभव प्रयास कर रहा है। वे संघर्ष में शामिल सभी पक्षों से बातचीत कर रहे हैं। नतीजतन, उन्होंने उनका (लोगों का) विश्वास हासिल कर लिया है। इस विश्वास का कारण यह है कि स्थानीय लोगों ने वर्षों से काणे जैसे लोगों के काम को देखा है।" संघ प्रमुख ने कहा, "हम सभी भारत को वैश्विक मुद्दों पर काम करने वाला देश बनाने की बात करते हैं, लेकिन यह केवल काणे जैसे लोगों की तपस्या के कारण ही संभव है।" उन्होंने कहा कि लगभग 15 वर्ष पहले 'पूर्वांचल' क्षेत्र को "समस्याओं वाला क्षेत्र" कहा जाता था और कुछ चरमपंथी समूह तो अलग होने की भी बोलते थे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ और क्षेत्र में बदलाव आया। भागवत ने कहा, "लोगों में स्वधर्म की भावना व्याप्त है। हम भारत के हैं, यह भावना मजबूत होती जा रही है। मणिपुर जैसे राज्यों में आज जो अशांति हम देख रहे हैं, वह कुछ लोगों का काम है जो प्रगति के मार्ग में बाधाएं उत्पन्न करना चाहते हैं। लेकिन उनकी योजना सफल नहीं होगी।" आरएसएस प्रमुख ने कहा कि जब 40 साल पहले स्थिति बदतर थी, तब लोग वहीं रुके, काम किया।

संपादकीय

एआई का महत्व

जब मैं अपने सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों के बारे में सोचता हूं, तो मुझे उनके चेहरे याद आते हैं। एक कृतज्ञता का भाव जागता है। हालांकि मुझे वह पाठ्यक्रम बिल्कुल याद नहीं, जो उन्होंने मुझे पढ़ाया। विषय चाहे विज्ञान के हों या मानविकी के, मुझे याद है कि इन शिक्षकों ने ज्ञान के प्रति अपने जुनून का उदाहरण पेश किया और छात्रों के साथ जुड़ने के मजेदार तरीकों को अपनाया। वे खुद अनुशासित तो थे ही, उन्होंने नैतिक गुणों के ऐसे उदाहरण पेश किए, जो मेरे जैसे हजारों छात्रों की जिंदगी के लिए प्रेरणा बन गए। अपने अनुभवों से मैंने सीखा कि शिक्षक महज पाठ्यक्रम पढ़ाने के लिए नहीं होते, बल्कि गलती कैसे स्वीकारें या फिर शिक्षा किस तरह छात्रों को खुद की खोज करने में मददगार साबित हो, यह सिखाने में भी सहायक होते हैं। क्या कोई मशीन ऐसा कर सकती है? जो मैंने अपने शिक्षकों से सीखा, उस आधार पर कह सकता हूं कि हर एक व्यक्ति को ऐसे कौशल सीखने की कोशिश करनी चाहिए, जो मशीन नहीं सिखा सकती और जो सही मायनों में आपको इन्सान बनाएंगे। खुद को मौलिक बनाए रखना जरूरी है। वैचारिक तौर पर सतर्क बने रहना जरूरी है, क्योंकि मशीन की आदत आपको एक ही ढर्रे पर सोचना सिखाती है, वह आपकी रचनात्मकता को सीमित भी कर सकती है। पिछली गर्मियों में एआई से निर्मित एक कलाकृति को कोलोराडो स्टेट फेयर में पहला पुरस्कार मिला। पहली नजर में मुझे भी यह कलाकृति बहुत अच्छी लगी। लेकिन दूसरे ही पल यह मुझे बेजान–सी लगने लगी। किसी व्यक्ति का जुनून, दर्द, लालसा या गहराई से महसूस किए गए जीवंत एहसास उसमें नदारद थे। कल्पना और अंतर्दृष्टि, जैसा मेरे एक शिक्षक कहा करते थे, मानवीय रचनात्मकता के आधार होते हैं। मैंने अपने शिक्षकों से जो सीखा, वह कुछ इस तरह था।

खुद की आवाज को पहचानें

आपने एनिमल फॉर्म पढ़ी और अब आप जॉर्ज ऑरवेल जैसा लिखना चाहते हैं, तो आप लेखन से जुड़े कोर्स करेंगे, कक्षाएं लेंगे। एआई की मदद भी ले सकते हैं। लेकिन इन सबका मकसद क्या है, यह पहचानना जरूरी है। आप ये सब कुछ पढ़ रहे हैं, ताकि आप उसे बाहर ला सकें, जो आपके भीतर मौलिक है। एआई सब कुछ कर सकता है, लेकिन खुद की आवाज तो आप ही पहचान सकते हैं।

प्रस्तुति का कौशल

आप हर समय यह दिखाना चाहते हैं कि आप सामान्य लोगों से बढ़कर हैं। आप एक भाषण देते हैं, लेकिन उससे पहले उसे तैयार करना होता है, जिसमें एआई आपकी मदद कर सकता है। लेकिन श्रोताओं से जुड़ने के लिए उनके मूड के हिसाब से कौन–सी बात पहले कहनी है, कौन–सी बाद में या कहनी ही नहीं है, यह गणना तो आपको ही करनी होगी। एआई इसमें क्या करेगा?

रचनात्मकता के लिए जरूरी बाल–सुलभता

बच्चों के दिमाग पर अपने अध्ययनों के लिए मशहूर एलिसन गोपनिक कहती हैं कि जब बच्चे जीपीटी–3 जैसे सिस्टम से बात करते हैं या कंप्यूटर पर कोई गेम खेलते हैं, तो वह प्रत्यक्ष व कल्पना की दुनिया के बीच एक मधुर रचनात्मकता का आनंद लेने लगते हैं। लेकिन, जब बच्चे किसी जीते–जागते व्यक्ति से बात करते हैं, या फिर मैदान में दोस्तों के साथ खेलते हैं, तब रचनात्मक ऊर्जा का जो प्रवाह होता है, वह एआई के साथ काम करते वक्त नहीं होता। जाहिर है कि एआई काफी कुछ सिखा सकता है, लेकिन सजीव चीजों से जो सीख मिलती है, उसकी बराबरी नहीं हो सकती।

दूसरों को समझना

जब आप साहित्य पढ़ते हैं, या नाटक, जीवनी या इतिहास, तो आप विभिन्न परिस्थितियों में दूसरों के दृष्टिकोण व व्यवहार का अर्थ समझते हैं। किसी दूसरे के दिमाग में क्या चल रहा है, अगर आप यह समझ सकते हैं, तो आपके पास किसी मशीन की तुलना में कहीं ज्यादा मूल्यवान कौशल है। एआई यह नहीं सिखा सकता।

संवेदनशीलता

कोई व्यक्ति किसी परिस्थिति विशेष में कैसा व्यवहार करेगा, यह एआई नहीं बता सकता। हां, वह यह जरूर बता सकता है कि उसे कैसा व्यवहार करना चाहिए। लेकिन उसकी यह सीख हर व्यक्ति पर सटीक बैठेगी, इसकी कोई गारंटी नहीं, क्योंकि हर व्यक्ति मौलिक है। अनुभव, ऐतिहासिक ज्ञान, विनम्रता, चिंतनशीलता और सबसे महत्वपूर्ण संवेदनशीलता भी एक तरह का ज्ञान है, जो मशीन नहीं दे सकती। एआई के युग की खासियत यह है कि यह हमें उस ज्ञान से अलग करने पर मजबूर करता है, जो मानवतावादी नहीं है। यह इस बात का संकेत करती है कि आने वाले एआई युग की वास्तविकता क्या हो सकती है। एआई संभवतः हमें शानदार उपकरण देगा, जो हमें मौजूदा मानसिक काम को आउटसोर्स करने में मदद करेगा। एआई के बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात यह हो सकती है कि यह हमें दिखाता है कि यह क्या नहीं कर सकता है, और इसलिए यह बताता है कि हम कौन हैं और हमारे पास क्या है। मशीन मददगार हो सकती हैं, लेकिन जो ज्ञान आपको समझदार बनाता है और रूपांतरित करता है, वह मशीन की परिधि से बाहर है।

मजबूत नेता धीरे-धीरे खत्म होते जा रहे

आदित्य

नरेंद्र मोदी अब पीछे हट रहे हैं। तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने के बाद से, "मजबूत नेता" धीरे–धीरे खत्म होते जा रहे हैं। और अभी तीन महीने भी नहीं हुए हैं जब से वे गठबंधन का नेतृत्व कर रहे हैं। सरकार में विवादास्पद "लेटरल एंट्री" पर यू–टर्न लेने का हालिया कदम इस बात का सबूत है कि श्री मोदी अपने फैसले को अनुमान से कहीं ज्यादा तेजी से लागू करने की अपनी क्षमता खो रहे हैं। यह प्रशंसकों और विरोधियों दोनों के लिए एक झटका है कि प्रधानमंत्री, जिन्हें उनके समर्थक आजादी के बाद से भारत का सबसे मजबूत नेता मानते हैं, वस्तुतः गिर रहे हैं। मीडिया के एक हिस्से के विभिन्न कारणों से अब "मोदी–कृत" होने के कारण, पतन को उचित परिप्रेक्ष्य में नहीं दिखाया या पेश नहीं किया जा रहा है। लेकिन यह अप्रत्याशित नहीं है। एक तरह से, यह उनके विरोधियों के लिए बेहतर है। आसान जीत से व्यक्ति आत्मसंतुष्ट हो जाता है। सच तो यह है कि इस पराजय के लिए अकेले मोदी ही जिम्मेदार हैं, क्योंकि वे अपने बड़े व्यक्तित्व से बाहर नहीं आ पाए हैं, जबकि भाजपा राजनीतिक क्षेत्र में सिकुड़ रही है और उनका करिश्मा खत्म हो रहा है, साथ ही हिंदुत्व कार्ड भी खत्म हो रहा है। न तो मोदी ने सामाजिक न्याय की ताकतों के इतने जोरदार ढंग से उभरने की उम्मीद की थी, न ही कांग्रेस पार्टी ने इस मुद्दे को इतने जोश के साथ उठाया। महाराष्ट्र और झारखंड में विधानसभा चुनाव कराने में देरी, साथ ही उत्तर प्रदेश में 10 और लोकसभा के लिए एक सहित 46 उपचुनाव, भाजपा के उत्साह को नहीं दर्शाते हैं। शिवाजी महाराज की मूर्ति के ढहने पर उनके द्वारा तुरंत माफी मांगना दर्शाता है कि उन्हें एक कोने में धकेल दिया गया है। मोदी कभी भी आम सहमति वाले व्यक्ति नहीं रहे हैं। इससे मोदी मिथक को बढ़ने में मदद मिली, जब हालात अच्छे थे। लेकिन गठबंधन के युग में "मेरा रास्ता या फिर राजमार्ग" का उनका दर्शन भाजपा के लिए अभिशाप बन गया है। त्रासदी यह है कि दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी समस्या को समझती है, लेकिन उस नेता को सुधारने में असमर्थ और असमर्थ है, जो पार्टी से भी बड़ा हो गया है। यह एक तरह की ग्रीक त्रासदी है। जैसा कि भाजपा के एक नेता ने अनौपचारिक रूप से कहा, यह श्री मोदी ही हैं, जिन्होंने भाजपा को सत्ता में लाया है और अगर वे अब इसे बर्बाद कर रहे हैं, तो कोई कैसे शिकायत कर सकता है? इसके विपरीत, "एक मोदी सब पे भारी" सिंड्रोम सत्तारूढ़ प्रतिष्ठान को बहुत नुकसान पहुंचा रहा है क्योंकि नेता द्वारा लिए गए किसी भी विचार के विपरीत या भिन्न राय को अपवित्र माना जाता है। पार्टी के सभी बुजुर्गों को मार्गदर्शक मंडल में भेज दिया गया है, जहाँ उन्हें प्यार और देखभाल नहीं मिलती। भाजपा में कोई भी व्यक्ति जो किसी भी स्तर का है, वह श्री मोदी की मदद करने के बारे में चिंतित नहीं दिखता है क्योंकि वे कभी भी सहानुभूति रखने वाले नेता के रूप में सामने नहीं आए हैं। मोदी मिथक को बढ़ाने में मदद करने के लिए अधिकांश मीडिया को बहुत पहले ही पिंजरे में बंद कर दिया गया था। संसद के हालिया बजट सत्र ने दिखाया कि कैसे संसद भवन परिसर में मीडिया को एक दिन के लिए कांच के पिंजरे में बंद रखा गया, जिससे बड़ा विवाद पैदा हो गया। उत्साहित विपक्षी दलों ने एक नया कथानक सामने रखा है, और मीडिया भी अब नई वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए थोड़ा बदल रहा है। विवादास्पद प्रसारण विधेयक को चुपचाप दफना दिया जाना मजबूत नेता के पीछे हटने का एक और संकेत है। पिछले दस सालों में एक भी फोटो फ्रेम ऐसा नहीं है जिसमें प्रधानमंत्री विपक्ष के साथ देश के भविष्य के बारे में गहन चर्चा करते हुए दिखाई दिए हों। प्रधानमंत्री के विरोधियों के साथ "मीठे" संबंधों के लिए इतना कुछ है। पिछले दस सालों में विरोधियों के साथ इतना बुरा व्यवहार कभी नहीं किया गया।

आपातकाल इसका एकमात्र अपवाद है। श्री मोदी दिन–प्रतिदिन सार्वजनिक रूप से यह दिखा रहे हैं कि वे अभी भी "मजबूत नेता" की यात्रा पर हैं, भाजपा के लिए संकट हर गुजरते दिन के साथ बड़ा होता जा रहा है। पाठ्यक्रम सुधार का पहला चरण राजनीतिक वास्तविकता में बदलाव को स्वीकार करना है। ऐसा नहीं हुआ है। पार्टी के पास इस समस्या को ठीक करने के लिए कोई स्वतंत्र अध्यक्ष नहीं है और जो अध्यक्ष है, वह मोदी का अनुयायी है, जो प्रधानमंत्री के आशीर्वाद से ही वहां है। पीएम के बिना, वह एक बड़ा शून्य है, और यह बात हर कोई जानता है। पूर्णकालिक पार्टी अध्यक्ष ढूंढना अपने आप में जोखिम भरा है, लेकिन मोदी के पास अपना आदमी होगा, लेकिन इसमें समय लगेगा। पार्टी के बाहर चाहे जो भी धारणा हो, पिछले एक दशक में मोदी ने आरएसएस को आसान शिकार बना दिया है। आरएसएस प्रमुख इस बात से खुश हैं कि उनके नेतृत्व में भाजपा इतनी आगे बढ़ी है। राजनीतिक विंग को कभी–कभार दी जाने वाली सलाह को छोड़ दें, तो मोहन भागवत परेशान नहीं दिखते। पशु चिकित्सक खुद से खुश हैं। "अपनी दुकान ठीक चल रही है"। राहुल गांधी ने पीएम के लिए अवसरों की एक खिड़की खोल दी थी। आम चुनाव के तुरंत बाद, उन्होंने पीएम की ओर सहयोग का हाथ बढ़ाते हुए कहा था कि जनादेश चाहता है कि आप शासन करें। आम सहमति का मंत्र सभी को साथ लेकर चलने में मदद कर सकता है, यह सुझाव था। श्री मोदी अभी भी षुस्साए युवाष हैं और वे पुरानी पार्टी और उसकी ष्वंशवादी संस्कृतिष पर निशाना साधने का कोई मौका नहीं छोड़ते। स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से राष्ट्र के नाम प्रधानमंत्री के संबोधन के दौरान विपक्ष के नेता को पांचवीं पंक्ति में बैठाना सुनिश्चित करना प्रधानमंत्री द्वारा विपक्ष को तुच्छ समझने का नवीनतम उदाहरण है। विपक्षी भारत समूह के लगभग शीर्ष पर पहुंचने के साथ लोकसभा चुनावों में भाजपा के बराबर सीटें जीतने के बाद, श्री मोदी को दबाव का एहसास हो रहा है, लेकिन वे दिखा रहे हैं कि वे अपने "मजबूत नेता" के कथानक को व्यर्थ में बचाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। विपक्ष भी इस बात का आनंद ले रहा है कि वे धीरे–धीरे मजबूत नेता को नीचे गिरा रहे हैं। अब, डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी जैसे भाजपा के असंतुष्ट लोग सार्वजनिक रूप से कह रहे हैं कि श्री मोदी को प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे देना चाहिए। डॉ. स्वामी ने सोशल मीडिया पर कहा है, "अगर मोदी आरएसएस के प्रचारक संस्कार के प्रति प्रतिबद्ध हैं और 17 सितंबर को अपने 75वें जन्मदिन के बाद मार्गदर्शक मंडल में शामिल होने की घोषणा नहीं करते हैं, तो वे किसी अन्य तरीके से प्रधानमंत्री की कुर्सी खो देंगे। यह नवीनतम बयान है, जो मजबूत नेता के लिए आने वाले कठिन समय का संकेत देता है।

निचली अदालतों द्वारा जमानत देने में अनिच्छा

विनोद

निचली अदालतों के न्यायाधीशों की दबाव झेलने की क्षमता न्याय प्रदान करने की प्रणाली की मजबूती के लिए मौलिक है। सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष के रूप में जिला न्यायाधीशों के सम्मेलन में बोलते हुए, कपिल सिब्बल ने ट्रायल, सत्र और जिला अदालतों के न्यायाधीशों को "बिना किसी डर या पक्षपात के" निर्णय देने के लिए सशक्त बनाने के महत्व पर जोर दिया। जिला न्यायपालिका को यह भरोसा दिया जाना चाहिए कि उनके निर्णयों को उनके खिलाफ नहीं माना जाएगा। श्री सिब्बल ने कहा कि चूंकि कमजोर नींव वाला कोई भी ढांचा समग्र रूप से कमजोर होता है, इसलिए जिला स्तर की न्याय प्रणाली में जनशक्ति और बुनियादी ढांचे की मात्रा और गुणवत्ता में सुधार करना आवश्यक है। यह एक गंभीर समस्या को छूता है। श्री सिब्बल ने इस स्तर पर आबादी के मुकाबले न्यायाधीशों के कम अनुपात का उल्लेख किया – एक मिलियन व्यक्ति पर 21 न्यायाधीश। विकसित देशों में, यह संख्या 100 या 200 न्यायाधीश है। परिणामी बोझ का मतलब है कि कई लोगों को न्याय के लिए अनिश्चित काल तक इंतजार करना पड़ता है। न्यायाधीशों का वेतन और पेंशन भी कम है। इसके अलावा, अदालतें और उनके परिसर हमेशा भीड़भाड़ वाले होते हैं, अक्सर पर्याप्त सुविधाओं के बिना। ऐसा लगता है कि निचली न्यायपालिका के कामकाज की स्थितियों पर बुनियादी ढांचे से परे भी ध्यान देने की जरूरत है। निचली न्यायपालिका द्वारा जमानत देने में आनाकानी करना 'अस्वस्थता' का लक्षण है। श्री सिब्बल ने जमानत पर सुप्रीम कोर्ट और भारत के मुख्य न्यायाधीश की ही तरह बात की। जमानत नियम होना चाहिए और जेल अपवाद, यह सिद्धांत है जिसका पालन किया जाना चाहिए। श्री सिब्बल ने इस पर जोर देते हुए कहा कि स्वतंत्रता लोकतंत्र का मूलभूत सिद्धांत है स्वतंत्रता का गला घोंटने वाली कोई भी चीज लोकतांत्रिक ताने–बाने को नुकसान पहुंचाती है। उन्होंने जिला न्यायाधीशों को याद दिलाया कि सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में आतंकवाद, मनी लॉन्ड्रिंग और मादक पदार्थों से संबंधित अपराधों के खिलाफ कानूनों के तहत आरोपित लोगों के लिए भी जमानत की बात कही थी। हालांकि तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखना होगा, लेकिन जमानत हमेशा योग्य मामलों में दी जानी चाहिए। अन्यथा जमानत के मामले सुप्रीम कोर्ट पर बोझ बन जाते हैं। लोगों के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि निचली अदालतों में जमानत पर इतना जोर दिया जा रहा है। लेकिन निचली न्यायपालिका को दबाव से बचाने का भी कोई रास्ता खोजना होगा, चाहे वह राजनीतिक हो या लोकप्रिय, क्योंकि जिला न्यायालय समाज के उथल–पुथल और तनाव के सबसे करीब हैं। जनशक्ति और बुनियादी ढांचे में सुधार की तरह, यह भी निचली न्यायपालिका को मजबूत करने का एक अभिन्न अंग होना चाहिए।

शिक्षक के प्रति आभार व सम्मान हो और गुरु के प्रति आस्था व श्रद्धा

ललित

भारत भर में शिक्षक दिवस मनाया है। यह अवसर विभिन्न शिक्षण संस्थानों मे इससे संबंधित आयोजनों का है, वहीं बहुधा सामाजिक संस्थाएं भी इस अवसर पर शिक्षकों को सम्मानित करने का काम करती है। जहां दुनियाभर में पांच अक्तूबर को शिक्षक दिवस मनाने का चलन है, वहीं भारत जैसे कई देश है जो इसे अपने अनुसार मनाते आए है। यूनेस्को द्वारा सन् 1994 मे पेरिस के एक कार्यक्रम उपरांत इसे विधिवत तौर पर प्रारंभ किया गया है। विदित हो की यूनेस्को संयुक्त राष्ट्र संघ से संबद्ध एक ऐसी इकाई है जो सांस्कृतिक विरासतों के संरक्षणार्थ कार्य करती है। ऐसे में यह एक प्रमाण है कि किसी भी आदर्श समाज के निर्माण में एक शिक्षक की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतएव एक पूरा दिन इनके नाम तो बनता ही है। यह अवसर अपने शिक्षकों के प्रति श्रद्धा भावों के प्राकट्य का है, वहीं यह दिन आदर्श शिक्षकों के मान सम्मान का पावन दिवस भी है। जबकि एक शिक्षक के लिए सोचे तो यह उनके आत्ममूल्यांकन का भी एक सुअवसर है। दरअसल, इन्हीं विषयों को ध्यान में रख कर यूनेस्को ने 1966 में विश्व शिक्षक दिवस मनाने की प्रस्तावना रखी थी। इसमें शिक्षकों के अधिकार एवं जिम्मेदारी संग उनके भर्ती, रोजगार तथा सीखने एवं सिखाने से संबंधित बातों को ध्यान में रखते हुए इसकी सिफारिश की गई थी। किंतु इसे मान्यता मिलने में लगभग 28 साल लग गए। बात भारत के संदर्भों मे करे, तो इसकी शुरुआत 1962 के एक घटना से संबद्ध है। इस वर्ष 19 मई को भारत के दूसरे राष्ट्रपति के रूप में डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन का कार्यकाल प्रारंभ हुआ था। इस अवसर पर उनके जन्म दिवस को मनाने उनके पूर्व छात्रों का एक समूह जुटा था। इसी वार्ता में यह चर्चा निकली की क्यों इनके जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाए। ऐसा कहा जाता है कि इसका प्रस्ताव स्वयं सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने दिया था। दरअसल, डॉ.राधाकृष्णन की छवि एक आदर्श शिक्षक एवं दार्शनिक की रही है। उपराष्ट्रपति एवं राष्ट्रपति के उत्तरदायित्वों के निर्वहन पूर्व इनका एक लंबा शैक्षणिक जीवन रहा है। ये आंध्र विश्वविद्यालय के कुलपति रहे है, वहीं ऑक्सफोर्ड एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के तौर पर अपनी सेवाएं दे चुके है, जबकि काशी हिंदू विश्वविद्यालय तथा दिल्ली यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति रहे हैं। इसके साथ ही यूनेस्को मे भारत के प्रतिनिधि के तौर पर अपनी सेवाएं दे चुके हैं। इनके इन्हीं सेवाओं के नाते ब्रिटिश हुकूमत के दौरान सर तो स्वतंत्र भारत में इन्हें भारत रत्न की उपाधि से विभूषित किया गया। वास्तव में ये भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद, और एक आस्थावान हिन्दू विचारक थे, जिनका भारतीय धर्म,उपनिषद एवं दर्शनशास्त्र में गहन अध्ययन था। किंतु क्या यह कुछ इतना पर्याप्त है कि इनके नाम पर शिक्षक दिवस मनाया जाए? वहीं क्या अतीत के विश्व गुरु भारत के मूल्यबोध का प्रारंभ ब्रिटिश साम्राज्य के समापनोपरांत माना जाना चाहिए!

शिक्षक दिवस का महत्व

बात शिक्षक की महत्ता को लेकर करें तो ये निश्चित ही किसी विषय विशेष को समझने के लिए एक प्रभावी माध्यम मात्र है। अगर इसे समझें तो वास्तव मे ये एक मार्गदर्शक पथप्रदर्शक सहायक और निर्देशक के जैसे हैं। किंतु ये विषय विशेष को समझने समझाने एवं बताने तक ही सीमित है। किंतु बात गुरु की करें तो ये कही व्यापक,गूढ़ और प्रभाव उत्पादक शब्द है। भारतीय जीवन दर्शन मे ज्ञानप्रदाताओं के लिए सर्वाधिक उपयुक्त शब्द गुरु है। गुरु ज्ञान का असीम स्रोत है। ये विद्या विशेष से लेकर व्यवहार शास्त्र से सुपरिचित कराने का एक सशक्त माध्यम है। रोजगार के तौर–तरीकों से लेकर संस्कार के सलीकों से अवगत का द्वार है। ये केवल विद्या अविद्या का भेद नहीं बतलाते हैं अपितु लौकिक जीवन संग पारलौकिक जीवन के कल्याणकर्ता है। ये अज्ञान से ज्ञान और अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं। इनकी उपलब्धि केवल विषय विशेष का ज्ञान एवं शिष्य के मन पर प्रभाव तक सीमित नहीं है। वास्तव में गुरु स्वयं मे एक सम्पूर्ण जीवन के रचनाकार है। यह व्यक्ति विशेष को गढ़ते हैं। उसे सज्जन सुशिक्षित सुसभ्य,संसाधनों से परिपूर्ण एवं सम्माननीय बनाते हैं, इसलिए भारतीय संस्कृति में इन्हें माता–पिता एवं देवता के समतुल्य रखा गया है, इसलिए इस पुरातन सभ्यता में गुरु का एक पर्व विशेष भी है। आषाढ़ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा को यह प्रतिवर्ष आता है। यह केवल ऋषि गुरु वेदव्यास का जन्म दिवस नहीं है। यह तो गुरुओं के कभी न खत्म होने वाले परम्परा का संदेश दिवस है। बात केवल व्यास परम्परा की ही करें तो सनातन मान्यताओं के अनुसार केवल इस एक परंपरा में अट्ठाइस प्रसिद्ध आचार्य हुए हैं। इन्हीं मे से एक महाभारत के रचनाकार एवं पुराणों के संकलनकर्ता देवी मत्स्यगंधा तथा ऋषि पराशर के पुत्र आचार्य कृष्ण द्वैपायन थे। वास्तव में यह दिवस गुरु के प्रति सम्मान आभार प्रकट करने का पर्व है। यह गुरुओं द्वारा दीक्षा तो शिष्यों द्वारा दीक्षा संकल्प वचन पूर्ति का पावन दिवस है। शिक्षा के दूसरे माध्यम एवं विषयों को छोड़ दें तब भी कला संगीत साहित्य तथा उपासना भक्ति तो पूर्णतया गुरु परंपरा पर आश्रित आधारित है। वास्तव में यह युगों–युगों से चली आ रही एक पुरातन अक्षुण परंपरा है। यह सम्पूर्ण मानव सभ्यता के कल्याण हेतु है। ऐसे में भारत सरकार को दो पहल की जरूरत है। प्रथमतः की शिक्षक दिवस के स्थान पर संपूर्ण देश में केवल और केवल गुरु पूर्णिमा मनाई जाए।

कर्नाटक में अनोखा राजनीतिक संकट

संजय

यह कहने के जोखिम पर भी कि यह व्यक्तिपरक बकवास या लंबे समय से चली आ रही चूक हो सकती है, कोई यह तर्क देने के लिए बाध्य महसूस करता है कि हाल के महीनों में कर्नाटक में एक खास तरह की निराशा, एक खास तरह का अंधेरा छाया हुआ है। इसका सूरज की चमक कम होने से कोई लेना–देना नहीं है, बल्कि शब्दों के भयानक पतन से है जिसे हम देख रहे हैं। आम नागरिक को हाल के दिनों में एक खास तरह की हिंसक भाषा का सामना करना पड़ा है। इसने मूड को खराब कर दिया है। अगर यह राजनीतिक रूप से गलत वाक्यांश नहीं है, तो कोई यह कह सकता है कि राजनेताओं के बीच अचानक से शुरू हुए कई शगैंग वॉरश उस चतुराईपूर्ण संयम को बिगाड़ने की धमकी देते हैं जिसे राजनीति ने अब तक बनाया था। हर कोई दूसरे को खत्म करने की होड़ में है। राजनेता आमतौर पर

यह सुनिश्चित करने के लिए सामान्यता की भावना पैदा करते हैं कि उनके लेन–देन निर्बाध रूप से चलते रहें। एक नियम है जिसके आगे वे एक–दूसरे को परेशान नहीं करते। लेकिन जब वह नियम टूट जाता है, जब वे खुद उस सावधानी से संतुलित सामान्यता को बिगाड़ते हैं, तो हम जानते हैं कि कुछ गंभीर चल रहा है। अगर कोई शेक्सपियर को इस स्थिति में बुलाए तो वह कहेगा, डेनमार्क राज्य में कुछ गड़बड़ है।ष यहाँ जो तर्क दिया जा रहा है उसे समझने के लिए, हमें मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और केंद्रीय मंत्री एच डी कुमारस्वामी के बीच नियमित अंतराल पर होने वाली बहस को सुनना होगा। हर दूसरे दिन, वे एक–दूसरे पर मुकदमा चलाने और दूसरे को जेल भेजने की धमकी देते हैं। वे एक–दूसरे के दावों को खारिज करने के लिए अपनी पिछली बेवफाई का हवाला देते हैं। वे दोनों स्थानीय टेलीविजन चौनलों के जाल में फंस जाते हैं, जो माइक्रोफोनों का एक खेडा है, जिसकी समाचार निर्माण की मुख्य तकनीक गाली–गलौज प्रसारित करना और कच्ची प्रतिक्रिया का पीछा करना है। इसी तरह, जब उपमुख्यमंत्री डी के शिवकुमार और कुमारस्वामी के बीच युद्ध छिड़ जाता है, तो शब्द निर्देशित मिसाइलों की तरह व्यवहार करते हैं, और ऐसा अक्सर होता है। आखिरकार, उनके पास अतिव्यापी राजनीतिक और जातिगत क्षेत्र हैं जिनकी रक्षा करनी है। माताएँ, पिता और परिवार उनके झगड़े में फंस जाते हैं। फिर, कुमारस्वामी के कुछ बिछड़े हुए मित्र और सहयोगी हैं, जो अब कांग्रेस में सिद्धारमैया गुट बनाते हैं, जिनका एकमात्र काम उन्हें भड़काना है। उनके बीच होने वाली बातचीत में कई तरह के इशारों की बौछार होती है। इसमें पूर्व सीएम बीएस येदियुरप्पा भी पीछे नहीं हैं। उनके खिलाफ पिछले और मौजूदा आरोपों, जिसमें च्ब्ह मामला भी शामिल है, को अक्सर उनकी जुबान बंद करने के लिए उछाला जाता है। लेकिन उनके पास उन सभी आरोपों का सामना करने का एक तरीका है, जो उनके सामने आते हैं। या यह बेशर्मी है? क्या यह प्रतिद्वंद्वी प्रशासन और राजनेताओं के साथ उनके कथित मधुर सौदों के आत्मविश्वास से उपजा है? यह आरोप अब उनके बेटे, कर्नाटक में भाजपा के मौजूदा अध्यक्ष बीवाई विजयेंद्र के करियर को खतरे में डाल रहा है। पिता और पुत्र पर लगातार 'समायोजन' का आरोप लगाने वाले लोग प्रेस मीट में अपनी ही पार्टी के लोग हैं। भगवा पार्टी के एक और पूर्व सीएम ने उनके खिलाफ खबरों को रोकने के लिए निषेधाज्ञा ले ली है। उनका डर क्या हो सकता है, इसकी कल्पना करना मुश्किल नहीं है। कर्नाटक कांग्रेस के अंदर सत्ता की खींचतान, जिसमें नेतृत्व परिवर्तन की गंध आ रही है, हवा के झोंकों को और तेज कर रही है। सिद्धारमैया की जगह लेने के लिए शिवकुमार अंधेरे में इंतजार कर रहे हैं। लेकिन चूंकि उनकी कमजोरियां बहुत ज्यादा हैं, इसलिए दूसरे लोग चुपके से कुर्सी पर कब्जा करना चाहते हैं। सिंहासन के इस खेल पर मीडिया की अटकलें कई मौसमों से चल रही हैं। यहां तक घ्घकि कुछ उम्मीदवारों की चुप्पी भी उनकी महत्वाकांक्षा के शोर को दबा नहीं सकती।

कुछ मामलों में, जिन्हें शहरी शिष्ट माना जाता है, उन्होंने अपने मुख्यमंत्री का बचाव करने के लिए नए सिरे से आक्रामकता दिखाई है, इस उम्मीद के साथ कि रूले का खेल उनके पक्ष में हो सकता है। उन्होंने राज्यपाल पर गालियां बरसाईं, लेकिन जब उन्हें एहसास हुआ कि वह दलित हैं और इससे वे कानूनी मुश्किलों में फंस सकते हैं, तो उन्होंने अपनी गति धीमी कर दी। यह सारी महत्वाकांक्षा घोटालों के शोर से परोसी जा रही है। जो अजीब बात है कि विपक्ष के पेशेवर राजनेताओं द्वारा नहीं, बल्कि उद्यमी कार्यकर्ताओं, प्रॉक्सी और पत्रकारों के एक समूह द्वारा फेंकी जा रही है। निर्वाचित पेशेवर अपनी सफेदी को बेदाग रखना चाहता है और इसलिए पेशेवर बदमाशों द्वारा उसकी सेवा की जा रही है। सिद्धारमैया का मामला वैसे भी मंजूरी के लिए अदालतों में पहुंच चुका है– 14 जगहों का मामला रहस्यमय तरीके से उनकी उतनी ही रहस्यमयी पत्नी को आवंटित किया गया, जिनकी कभी सार्वजनिक रूप से तस्वीरें नहीं खींची गईं। उनकी खातिर, सिद्धारमैया ने अपनी ही सरकार से मुआवजा मांगा। घोटाले के नए भंवर ने खड़गे परिवार को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। उन पर सरकारी जमीन के टुकड़े एक ऐसे व्यक्ति के नाम पर ट्रस्ट को दिलवाने का आरोप लगाया जा रहा है, जिसने आत्मज्ञान की तलाश में सब कुछ त्याग दिया– सिद्धार्थ।

एल.पी.एस समूह ने हर्षित सिंह व शिखर पाल सिंह को बनाया महाप्रबंधक, साथ ही सांसद डा. एस.पी.सिंह ने शिक्षकों को बाटे 50 लाख के पुरस्कार

ब्यूरो चीफ आर एल पांडेय

लखनऊ। शिक्षक दिवस के अवसर पर लखनऊ पब्लिक स्कूल्स एंड कॉलेजेज के गोमतीनगर परिसर स्थित श्री रामलाल मेमोरियल प्रेक्षागृह में शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें सभी शाखाओं के प्रिंसिपल्स व शिक्षकों को सम्मानित किया गया। प्रबंधतंत्र में महत्वपूर्ण बदलाव हुए प्रबंधतंत्र ने हर्षित सिंह व शिखर पाल सिंह को लखनऊ पब्लिक स्कूल्स एंड कॉलेजेज का महाप्रबंधक बनाया। प्रबंध निदेशक सुशील कुमार द्वारा हर्षित सिंह एवं शिखर पाल सिंह को शपथ दिलाई गयी। इस सम्मान समारोह में डॉ. एस.पी.सिंह ने सभी शाखाओं के शिक्षकों को करीब 50 लाख के उपहार देकर सम्मानित किया, इसके अतिरिक्त बेस्ट टीचर, बेस्ट सपोर्टर, बेस्ट आलराउंडर व फुल अटेंडेंस कैटगरी में 164 शिक्षकों को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। डॉ. एस.पी.सिंह ने एल.पी.एस. के सभी शिक्षकों व उसके ऊपर के पदाधिकारियों को वार्षिक वृद्धि (अनुअल इन्क्रीमेंट) के अलावा मासिक वेतन में सितम्बर 2024 से, विशेष पुरस्कार के रूप में, सभी शिक्षकों के वेतन में 1000/– क्लर्क व समकक्ष के वेतन में 750/– तथा सपोर्टिंग स्टाफ के वेतन में 500/– प्रति माह वृद्धि की घोषणा की पूर्व एम. एल.सी. कान्ति सिंह, डायरेक्टर्स– नेहा सिंह व गरिमा सिंह, डिप्टी डायरेक्टर मीना तांगड़ी तथा सभी शाखाओं की प्रिंसिपल्स ने शिक्षकों को बधाइयाँ दी। इस अवसर पर शिक्षकों ने मूल्यपरक विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी।

इनमे "रूबरू" नामक प्रोग्राम को सभी शाखाओं के संगीत शिक्षकों ने प्रस्तुत किया जिसमें गणित व विज्ञान का समन्वय संगीत के साथ दिखाया गया । नारी शक्ति पर आधारित नाटक सीतापुर शाखा के शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसमें नारी को सबकी जननी व सभी प्रकार के अपराधों पर रोक लगाने के तौर पर दिखाया गया। इसी क्रम में कोरियोग्राफर नव द्वारा संस्था के चेयरमैन व वर्तमान प्रतापगढ़ सांसद डॉ. एस.पी.सिंह के जीवन पर आधारित लघु नाटिका "सिंह साहब" का जीवंत प्रस्तुतीकरण हुआ जिससे सभी शिक्षक भावुक हो उठे। अंत में संस्था की डायरेक्टर नेहा सिंह ने अपने सभी शिक्षकों तथा स्टाफ को बधाई देते हुए सफल आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

सकारात्मक नेतृत्व संस्था की सफलता के लिए जरूरी – प्रो पुरोहित

ब्यूरो प्रमुख

विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल यूनिवर्सिटी जौनपुर के सेंट्रल ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट सेल और इनक्यूबेशन सेंटर की सहायता से एक्सपर्ट टॉक शो आयोजन शुक्रवार को किया गया। इसकी शुरुआत में प्रो. अविनाश डी पाथर्डीकर ने लीडरशिप से जुड़ी हुई विभिन्न स्थितियों पर चर्चा करते हुए मुख्य अतिथि एवं अन्य अतिथियों का स्वागत किया और कार्यशाला के उदेश्य पर प्रकाश डाला। कार्यशाला को संबोधित करते हुए दून विवि देहरादून के प्रबंधन के डीन प्रो एच सी पुरोहित ने कहा कि संस्थान में सफलता प्राप्त करने के लिए लीडरशिप के गुणों को कैसे बढ़ाया जाए यह संस्थान के विकास के लिए आवश्यक है, इस संदर्भ में उन्होंने सफल नेतृत्व के छह बिंदुओं पर चर्चा करते हुए कहा कि यह मुख्य रूप से छः शब्दों पर केंद्रित है. जिसमें पहला सेल्फ मैनेजमेंट यानी हम अपने आप को कैसे मैनेज करते हैं अलग–अलग परिस्थितियों के हिसाब से, दूसरा, एफर्ट मैनेजमेंट है, जिसमें हमें कार्यस्थल पर नित रोज नये प्रयोग करते रहने और उसको समय समय पर को मूल्यांकन करने पर ध्यान देने की जरूरत है, तीसरा, कंपनी मैनेजमेंट यानी हम किस तरह के लोगों के साथ रहते हैं उनके साथ कैसे सामंजस्य स्थापित करें कि टीम

में एक दूसरे की कमियों को समझ कर उसे शक्ति में बदलें. चौथा गुण है रिलेशनशिप मैनेजमेंट, यानी हमें अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल जिंदगी में तालमेल स्थापित करना चाहिए क्योंकि कार्यस्थल पर कार्यरत कर्मियों के साथ साथ नेतृत्व को उनके परिवारों के बारे में सोचना चाहिए.

इमोशंस मैनेजमेंट के गुण होने से नेतृत्व का कर्मियों के साथ भावनात्मक लगाव स्थापित होता है.

और अंतिम है टाइम मैनेजमेंट यानी हम जो भी काम करते हैं उसको समय के साथ संपादित होना के लिए समय प्रबंधन होना जरूरी है तभी संस्था अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर पायेगी और इसे नेतृत्व की सफलता माना जायेगा.

प्रो पुरोहित ने कहा कि हमें अपनी जिंदगी में अलग–अलग परस्थितियों के हिसाब से प्रयोग होने वाले लीडरशिप के विभिन्न गुणों को विकसित करना होगा तभी हम अपनी जीवन में आगे बढ़ सकते हैं।

कार्यक्रम के अंत में प्रो प्रदीप कुमार, निदेशक केंद्रीय ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट प्रकोष्ठ ने प्रकोष्ठ की उपलब्धियों के साथ साथ का जिक्र किया और भविष्य की योजना पर प्रकाश डालते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

न्यायालय से स्थगन आदेश के बाद भी हो रहा निर्माण,वयोवृद्ध फरियादी ने मामले में मुख्यमंत्री सहित अधिकारियों से लगाई न्याय की गुहार– कोई सुनवाई नही

ब्यूरो चीफ आर एल पांडेय

दैनिक देश की उपासना

प्रयागराज। मुख्यमंत्री को दिए प्रार्थना पत्र में कहां गया है कि वयोवृद्ध प्रार्थिनी शान्ती देवी पत्नी रामधन नि० हथिगहां तहसील सोराब जनपद प्रयागराज की अनपढ व गरीब महिला है जिनकी आयु लगभग 95 वर्ष है न्यायालय सिविल जज कनिष्ठ श्रेणी कक्ष सं० 8 इलाहाबाद वाद संख्या 2431 सन 2024 शान्ती देवी बनाम प्रमोद कुमार आदि के गाटा संख्या 83 रकबा 0.0910 है० स्थित मौजा हथिगहा परगना मिर्जापुर चौहारी तहसील सोराव जनपद प्रयागराज पारित आदेश दिनांक 4–9–2024 की आदेशित किया कि उक्त भूमि में प्रार्थिनी के कब्जा दखल व उपयोग उपभोग में किसी प्रकार का न तो अवरोध उत्पन्न करे और न ही मंदिर का निर्माण करे। उक्त स्थगन आदेश के बावजूद वर्तमान पार्षद आरती मौर्या के पति प्रमोद कुमार पुत्र रामराज निवासी हथिगहा थाना नबाबगंज प्रयागराज अपने प्रभाव व दबाब में श्रीमान उपजिलाधिकारी सोराव तथा श्रीमान प्रभारी निरीक्षक थाना नबाबगंज को मिलाकर उपरोक्त स्थगन प्राप्त

भूमि पर जबरन अवैध निर्माण कार्य करते हुये मंदिर बना रहे हैं जिसका उन्हें कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद में आबादी की भूमि संख्या 82 के बाबत मामला विचाराधीन है। इसके बावजूद पार्षद के पति प्रमोद कुमार द्वारा प्रार्थिनी के गांव के गुटबाजी व चुनावी रंजिश के कारण जबरन त्थगन प्राप्त भूमि पर मंदिर बनाना चाहते है। माननीय न्यायालय के आदेश के अनुपालन श्रीमान उपजिलाधिकारी सोराव तथा श्रीमान प्रभारी निरीक्षक थाना नबाबगंज को स्थगन प्राप्त भूमि पर अवैध तरीके से मंदिर के निर्माण को अविलम्ब रोका जाना अति आवश्यक है।

अतः श्रीमान जी से प्रार्थना है कि माननीय न्यायालय द्वारा पारित आदेश दिनांक 4–9–2024 के अनुपालन में गाटा संख्या 83 रकबा 0.0910 हे० स्थित मौजा हथिगहा परगना मिर्जापुर चौहारी तहसील सोराव जनपद प्रयागराज पर किये जा रहे मंदिर के निर्माण की अविलम्ब रोकने हेतु श्रीमान उपजिलाधिकारी सोराव तथा श्रीमान प्रभारी निरीक्षक थाना नबाबगंज कमिश्नरेट प्रयागराज को आदेशित करने की कृपा करे। उक्त प्रार्थना पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई गई है, लेकिन आरोप है कि एसडीएम द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जा रही है।

111 अभ्यर्थियों का चयन किया गया – जिला सेवायोजन अधिकारी प्रज्ञा त्रिपाठी

ब्यूरो चीफ आर एल पांडेय

लखनऊ। क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय, लालबाग लखनऊ परिसर में आज दिनांक 06.09.2024 को दिव्यांगजनों हेतु एक दिवसीय रोजगार मेले का आयोजन किया गया इस रोजगार मेले में 10 कम्पनियों NIVA BHUPA/ AMAZON/ TELE PERFORMANCE/ STARTEK/AVSAR/ TEAM HR/ WORK NEXT/WE WIN/ EMROLD/THE KRAFTORS ने प्रतिभाग किया जिसमें लगभग 292 अभ्यर्थी उपस्थिति हुए। इन अभ्यर्थियों में से Tele Sales/ Customer Support / Sales Executive/ Scanning Packing/Picker आदि के पदों पर 111 अभ्यर्थियों

का चयन किया गया।

इस अवसर पर सहायक निदेशक एवं प्रभारी जिला रोजगार सहायता अधिकारी ने नियोजक एवं आगन्तुक अभ्यर्थियों का स्वागत करते हुए बताया कि प्रदेश में युवाओं को रोजगार/स्वःरोजगार से जोडकर आत्मनिर्भर भारत अभियान को सफल बनाने तथा हर हाथ को काम सरकार की प्राथमिकताओं में है। कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उपस्थित रहकर रोजगार मेले में पूर्ण सहयोग किया।

राजाराम ने डीएम से किया शिकायत घूस के बटवारे में नही मिल रहा हिस्सा

ब्यूरो प्रमुख

विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। शाहगंज तहसील में कार्यरत एक चपरासी का मामला तेजी से सोसल मीडिया पर वायरल हो रहा है। गुरुवार को इंटरनेट पर एक पत्र प्रसारित हुआ। जिसमें तहसील के एक प्राइवेट कर्मचारी ने नायब तहसीलदार के द्वारा घूस लिए जाने की शिकायत करते हुए स्वयं को उचित पारिश्रमिक दिलाने की मांग की थी। इस विषय में उप जिलाधिकारी ने कहा कि शिकायती पत्र का मामला संज्ञान में आया है जांच की जा रही है तहसील में कोई कोई प्राइवेट कर्मचारी नहीं है। फिलहाल एसडीएम का ये बयान काफी सोचनीय और जांच के काबिल है। इंटरनेट पर गुरुवार की शाम को एक पत्र वायरल होने लगा। वायरल पत्र में तहसील के एक नायाब तहसीलदार के कार्यालय में खुद को प्राइवेट चपरासी बताने वाले ने शिकायती पत्र जिलाधिकारी को रजिस्टर्ड डाक के माध्यम से भेजा था। उक्त पत्र पर जिलाधिकारी कार्यालय से जांच का आदेश दिया गया। पत्र में उप जिलाधिकारी ने मामले को लेकर रिपोर्ट देने की बात नायब तहसीलदार को लिखी थी। उक्त पत्र में शिकायत करते हुए खुद को प्राइवेट चपरासी बताने वाले व्यक्ति ने कहा है कि नायब तहसीलदार के कार्यालय में मैं प्राइवेट कर्मचारी के रूप में काम करता हूं और सारे घूस व पैसा मेरे द्वारा ही वसूला जाता है। लेकिन मेरे साथ दो और अन्य प्राइवेट कर्मचारी भी काम करते हैं। लेकिन, हम लोगों को एक हजार रुपए के बजाय पांच सौ दिया जाता है जो कि गलत है। जिलाधिकारी से पत्र भेजने वाले ने अनुरोध किया था कि उसे एक हजार रुपए प्रतिदिन दिलवाया जाए। यदि जांच में उक्त पत्र सही पाया जाता है तो प्रदेश की योगी सरकार पर नौकरशाही का भयंकर कलंक माना जाता है। सरकार ने सरकारी कार्यालयों में प्राइवेट कर्मचारियों को हटाने का निर्देश काफी पहले दिया था, बावजूद इसके नायब तहसीलदार कार्यालय के प्राइवेट कर्मचारी का दुखड़ा कौन सुने, विश्वसनीय सूत्रों से पता चला है कि उक्त कर्मचारी को गुरुवार दोपहर डांट फटकार और साहबान वाले रवैया को अख्तियार करते हुए सादे कागजात पर हस्ताक्षर लेकर भगा दिया गया है। देखना ये है कि नौकरशाही के नुमाइंदे जांच में कितनी पारदर्शिता लाते हैं।

लखनऊ व्यापार मण्डल ने रक्षामंत्री राजनाथ सिंह से भेंट कर ज्ञापन सौंपा

ब्यूरो चीफ आर एल पांडेय

लखनऊ। लखनऊ व्यापार मण्डल का एक प्रतिनिधि मण्डल अध्यक्ष अमरनाथ मिश्र के नेत्रत्व में रक्षामंत्री राजनाथ सिंह से भेंट कर ज्ञापन सौंपा।

अध्यक्ष अमरनाथ मिश्र जी ने मा. राजनाथ सिंह जी को बताया कि नये 21ट्रेडों पर प्रतिष्ठान लाइसेन्स शुल्क नगर निगम के द्वारा प्रस्तावित है जो कि व्यापारी समाज को स्वीकार नहीं है, एक तरफ तो सरकार लाइसेन्स मुक्त व्यवस्था व्यापारियों को देना चाहती है दूसरी तरफ नगर–निगम द्वारा पुनः लाइसेन्स व्यवस्था में झोकने का प्रयास किया जा रहा है।

मा. रक्षामंत्री जी ने तत्काल कार्यवाही करते हुए मा. महापौर सुषम खर्कवाल को बुलाकर निर्देशित किया कि व्यापारियों की इच्छा के विपरीत कोई व्यवस्था लागू नहीं करनी चाहिए इसे तत्काल वापस लेना चाहिए।

तत्पश्चात मिश्रा जी ने मा. राजनाथ सिंह जी को अवगत कराया कि 30सितम्बर 2024 तक लम्बित अपीलों को निस्तारित करने के राज्य कर के प्रमुख सचिव के आदेश दिया गया है ऐसी स्थिति में प्रशासनिक नियंत्रण के नाम पर किया जा रहा कोई भी दबाव न्यायिक प्रणाली की स्वतंत्रता में सीधा हस्तक्षेप है। यह न केवल अनुचित है बल्कि न्याय के मूलभूत सिद्धान्तों के भी विपरीत है। अधिकारियों से जल्दबाजी में न्याय मिलपाना सम्भव नहीं है।

जीएसटी लागू 2017 में हुआ था और आज तक प्रदेश में स्टेट ट्रिब्युनल का गठन नहीं हुआ है ऐसे में 50 हजार से लेकर करोड़ो रूपये वाले व्यापारियों की अपील होगी ऐसे छोटे–छोटे व्यापारी जिनकी 50हजार या लाख रूपये के लिए उच्च न्यायालय में लगभग 50 हजार रूपये फीस ही होगी ऐसे में आर्थिक स्थिति के कारण हाई कोर्ट नहीं जा सकते जो कि व्यापारियों के हित के खिलाफ है ऐसे में स्टेट ट्रिब्युनल के गठन से वह ट्रिब्यूनल में ही अपनी अपील दाखिल कर केस को निस्तारित करा

सकते है अतः तत्काल स्टेट ट्रिब्यूनल का गठन किया जाय।

जीएसटी कॉउन्सिल की 53 बैठक में निर्णय लिया गया था वर्ष 2017–18, 2018–19, 2019–20 में व्याज एवं पेनाल्टी माफ किया गया है परन्तु नोटीफिकेशन जारी न होने के कारण व्यापारियों को इसका लाभ नहीं मिल रहा है जिससे व्यापारी परेशान है, मा. वित्तमंत्री जी से नोटीफिकेशन जारी कराने की कृपा करें।

कैसरबाग व्यापार मण्डल के अध्यक्ष मुकेश महराज जी ने मा. रक्षामंत्री जी के सापने कैसरबाग में लगने वाले जाम एवं बस अड्डे को हटाकर वहॉ पर पार्किंग की व्यवस्था की जाय जाम से मुक्ती मिल सके।

प्रतिनिधि मण्डल में मुख्य रूप से अध्यक्ष अमरनाथ मिश्र, अनिल विमरानी, अनुराग मिश्र, अभिषेक खरे, मुकेश महाराज, अनुराग साहू, योगेश मुलवानी, प्रशान्त निगम आदि उपस्थिति रहे।

टीडीएमसी स्कूल में मानाया गया शिक्षक दिवस समारोह

तिलकधारी मेमोरियल कॉलेज एवं लायंस क्लब जौनपुर क्षितिज ने संयुक्त रूप से डॉ० सर्वपल्ली डॉक्टर राधाकृष्णन का जन्म दिवस टीचर्स डे के रूप में स्कूल के हरे–भरे प्रांगण में मुख्य अतिथि डॉ राजेंद्र कुमार सिंह (विभागाध्यक्ष भूगोल – टी डी कॉलेज एवं पूर्व पीसीएस अधिकारी), विशिष्ट अतिथि डॉ० हरि शंकर सिंह (टी डी कालेज) एवं डॉ अंजना सिंह (असिस्टेंट प्रोफेसर – टी डी कालेज एवं प्रदेश अध्यक्ष राष्ट्रीय हिंदू भगवा वाहनी) तथा डॉ० (कैप्टन) इंद्रजीत सिंह (चेयरमैन टीडीएमसी स्कूल) की अध्यक्षता में माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर व माल्यार्पण कर बड़े धूमधाम से मनाया गया। अध्यापिका श्रीमती प्रतिभा सिंह को बेस्ट टीचर अवार्ड से सम्मानित किया गया।

बच्चों ने बहुत ही मनमोहक कार्यक्रम जैसे ग्रुप डांस, सोलो डांस, नाटक, हिंदी, अंग्रेजी एवं संस्कृत में भाषण, अध्यापकों की मिमिक्री आदि प्रस्तुत किए। मुख्य अतिथि ने अपने संक्षिप्त भाषण में 3डी फार्मूला (डेडीकेशन, डिवोशन एवं डिसिप्लिन) के बारे में बच्चों को विस्तार से बताया। डॉ हरि शंकर सिंह ने बच्चों के विकास से संबंधित बहुत से टिप्स दिए। चेयरमैन डॉ सिंह ने गुरुओं को वाशिंग मशीन बताया। जैसे कपड़े वाशिंग मशीन में धुले जाने पर साफ हो जाते हैं वैसे ही गुरु बच्चों की धुलाई कर, उनके अंदर छिपी समस्त गंदगियों को बाहर निकाल कर उन्हें इंसान बनाता है।

इस कार्यक्रम में टीडीएमसी स्कूल एवं लायंस क्लब जौनपुर क्षितिज ने संयुक्त रूप से 30 अध्यापक एवं अध्यापिकाओं को गिफ्ट एवं अंग वस्त्रम भेंट करके सम्मानित किया। लायंस क्लब जौनपुर क्षितिज के वर्तमान अध्यक्ष श्री प्रदीप कुमार सिंह ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम में प्रधानाचार्या अर्चना सिंह, लायंस क्लब क्षितिज के संस्थापक अध्यक्ष शशांक सिंह ष्रानू, स्कूल प्रबंधक व पूर्व अध्यक्ष दिलीप सिंह, जय कृष्ण साहू ष्जैकीष्, उपाध्यक्ष अतुल सिंह, सचिव अजीत सोनकर, कार्यक्रम संयोजक हफीज शाह, संजय जायसवाल, देवेंद्र सिंह पिंकू, नितिन नारायण गुप्ता व विद्यालय के सभी टीचर्स व छात्र आदि उपस्थित रहे।

25 करोड़ रुपए घोटाले के आरोप में छावनी परिषद कार्यालय पर सीबीआई का छापा

अयोध्या। गुरुवार को दोपहर कैंटोनमेंट छावनी परिषद में उस समय हड़कंप मच गया जब अचानक सीबीआई की टीम कैंटोनमेंट छावनी में आकर पूरे परिसर को अपने कब्जे में ले लिया।इसकी भनक लगते ही वहां पर कार्यरत अधिकारियों से लेकर कर्मचारियों तक हाथ–पांव फूल गए। इस मौके पर सीबीआई की टीम ने वहां पर सभी फाइलों को सील कर अपने कब्जे में ले लिया। कार्यालय के अंदर कोई भी बाहरी न जा सके इसके लिए जांच करने मे जुटी सीबीआई की टीम ने अंदर से सभी दरवाजे बंद कर दिया था।यहां तक कि मीडिया कर्मी को भी वहां तक नही फटकने दिया।मिली जानकारी के मुताबिक गुरुवार को दोपहर सीबीआई टीम ने अयोध्या जिले में कैंटोनमेंट बोर्ड कार्यालय में छापा मारा है।सीबीआई ने यह कार्यवाही 25 करोड़ रुपये के घोटाले के आरोप के बाद छापा मारा है।बताते चलें कि अभी कुछ दिनों पहले पत्रकार वार्ता के दौरान समाजवादी पार्टी के सांसद अवधेश प्रसाद की मौजूदगी में सपा नेता पवन पांडेय ने आरोप लगाया था कि विकास कार्यों के टेंडर में लगभग 25 करोड़ रुपये का घोटाला हुआ है. समाचार लिखे जाने तक कैंटोनमेंट बोर्ड दफ्तर में सीबीआई का छापा जारी था।इस मौके पर सपा नेता पवन पाण्डेय ने बताया था कि कहा था कि बीजेपी ने अयोध्या की जनता के साथ ठगी कर रही है।सीबीआई के छापे पर पवन पांडेय ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि आज हमें सीबीआई से की जा रही कार्यवाही से न्याय की उम्मीद जगी हुई है। कैंटोनमेंट बोर्ड में भ्रष्टाचार हो रहा है।यह बोर्ड केंद्र सरकार और रक्षा मंत्रालय के तहत आता है। उन्होंने भाजपा पर आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी मंचों से ईमानदारी की बात करती है लेकिन हकीकत कुछ और है।उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि जल्द से जल्द जांच हो।सब पर जांच हो और जिम्मेदार बर्खास्त किए जाएं।यह सब बीजेपी के संरक्षण में हो रहा है। फिलहाल शाम तक सीबीआई टीम कैंटोनमेंट छावनी परिषद कार्यालय में छानबीन करती रही।इस मामले कोई भी अधिकारी व कर्मी कुछ भी बताने से कतराते रहे।

07 सितम्बर से होगा खाद्यान्न का वितरण – कमल नयन सिंह

हरदोई(अंबरीष कुमार सक्सेना) जिला पूर्ति अधिकारी कमल नयन सिहं ने बताया है कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम–2013 योजनान्तर्गत माह सितम्बर, 2024 के सापेक्ष

आवंटित खाद्यान्न को अन्त्योदय कार्ड धारकों को 14 कि०ग्रा० गेहूँ, 19 कि०ग्रा० चावल, 02 कि०ग्रा० अवशेष बाजरा (प्रथम आवक प्रथम पावक) उपलब्धतानुसार (कुल 35 कि०ग्रा० प्रति कार्ड) एवं पात्र गृहस्थी कार्डधारकों को 02 कि०ग्रा० गेहूँ, 02 कि०ग्रा० चावल, 01 कि०ग्रा० अवशेष बाजरा उपलब्धतानुसार (कुल 05 कि०ग्रा० प्रति यूनिट) एवं अन्त्योदय राशनकार्ड धारकों को त्रैमास जुलाई, अगस्त व सितम्बर, 2024 के सापेक्ष 03 कि०ग्रा० चीनी प्रति कार्ड रू0 18/– प्रति किं०ग्रा० की दर से वितरण 7 सितम्बर से 25 सितम्बर 2024 के मध्य वितरण किया जायेगा। उन्होंने कहा कि खाद्यान्न प्राप्त करने से पूर्व अपने राशन कार्ड के समस्त यूनिटों की ई–के०वाई०सी० अपनी स्वंय की उचित दर दुकान से अवश्य कराये, ताकि आपकों निःशुल्क खाद्यान्न का लाम मिलता रहें। खाद्यान्न के वितरण में पोर्टेबिलिटी ट्रान्जेक्शन की सुविधा उपलब्ध रहेगी। विक्रेता अपने उपलब्ध स्टॉक की सीमातक (खाद्यान्न व बाजरा) पोर्टेबिलिटी ट्रान्जेक्शन कर सकेंगे। उक्त योजनान्तर्गत वितरण की अन्तिम तिथि 25 सितम्बर 2024 होगी, जिस दिन आधार प्रमाणीकरण के माध्यम से खाद्यान्न प्राप्त न कर सकने वाले उपभोक्ताओं हेतु मोबाईल ओ०टी०पी० वेरीफिकेशन के माध्यम से वितरण सम्पन्न किया जा सकेगा।

चकबन्दी के लिये हुई एसीओ और ग्रामीणों की हुई बैठक

ब्यूरो प्रमुख

विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। जफराबाद थाना क्षेत्र के सिरकोनी विकास खण्ड के अहमदपुर गांव में चकबंदी कराने को लेकर शुक्रवार को चकबंदी विभाग के एसीओ व लेखपालो के साथ ग्रामीणों की बैठक पंचायत भवन पर हुई।बैठक के दौरान ग्रामीणों ने एक सुर में गांव में जल्द से जल्द चकबंदी करने की मांग किया। ज्ञात हो अहमदपुर गांव में 27 जुलाई 2014 से अहमदपुर गांव की चकबंदी प्रक्रिया चालू है। परन्तु 10 वर्ष बीत जाने के बाद भी गांव में आज तक चकबंदी नहीं हुई।अब उसकी समय सीमा निर्धारित की जाए। चकबंदी अधिकारियों द्वारा आश्वासन दिया गया कि एक माह में फॉर्म 5 का वितरण किया जाएगा। एक से दो वर्ष के भीतर चकबंदी प्रक्रिया पूर्ण कर दी जाएगी। इसके लिए पिछले 2 वर्ष से लेखपाल द्वारा निरंतर कार्य किया जा रहा है। वहीं राजस्व विभाग द्वारा कागजात को चकबंदी विभाग को ट्रांसफर कर दिया गया है। जिसके कारण अब जमीनी समस्या का निदान जल्दी नही हो पाता है। एसीओ राजेश सुमन ने बताया कि ग्रामीणों ने एक स्वर में कहा कि गांव में चकबंदी जल्द से जल्द हो जाए। जिसको लेकर उन्होंने आश्वासन दिया है कि गांव में जल्दी चकबंदी की प्रक्रिया पूर्ण कर ली जाएगी। बैठक में प्रधान बचुलाल शर्मा,सर्वेश सिंह,मनोज सिंह,बिपिन बिहारी सिंह,बिन्नू सिंह,अमूल्य सिंह सहित गांव के अन्य लोग मौजूद रहे।

क्रानिक पेन सिन्ड्रोम एवं उनके आधुनिक इलाज की जागरूकता बहुत महत्वपूर्ण है

ब्यूरो चीफ आर एल पांडेय

लखनऊ। पेन अवेयरनेस माह ''सितम्बर'' के अवसर पर डा0 राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ के प्रशासनिक भवन में 'पेन मेडिसिन यूनिट' एनेस्थीसिया विभाग द्वारा क्रॉनिक पेन सिन्ड्रोम मे पेन मेडिसिन एवं मिनमली इनवेसिव पेन व स्पाइन इंटरवेंशन (मिप्सी) विषय पर 6 सितम्बर को सी0एम0ई0 का आयोजन किया गया।

सी0एम0ई0 के संरक्षक व मुख्य अतिथि, प्रो0 सी0एम0 सिंह, निदेशक, डा0 राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ ने बताया कि देश प्रत्येक 5 में से 1 भारतीय किसी न किसी प्रकार के क्रॉनिक पेन से ग्रसित है। अतः क्रॉनिक पेन सिन्ड्रोम एवं उनके आधुनिक इलाज की जागरूकता बहुत महत्वपूर्ण है। लोहिया संस्थान में 'पेन मिडिसिन यूनिट' लगातार क्रॉनिक पेन के रोगियों का उपचार कर रहा है, और देश के कोने–कोने से मरीज आते हैं।

प्रो0 (ब्रिग्रडियर) टी0 प्रभाकर, वी0एस0एम0, एक्स वाइस चांसलर सैफई, प्रो0 दीपक मालवीय, प्रिन्सिपल, हिन्द मेडिकल कॉलेज, प्रो0 अनिल अग्रवाल, विभागध्यक्ष, ऐनेस्थीसिया विभाग, अपोलो हॉस्पिटल लखनऊ, प्रो0 (कर्नल) आर0के0 त्रिपाठी, ऐरा मेडिकल कॉलेज, लखनऊ विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में मैजूद रहे।

प्रो0 पी0के0 दास, विभागाध्यक्ष, एनेस्थीसिया विभाग, डा0 राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ ने सभी वरिष्ठ चिकित्सकों व अतिथियों का स्वागत किया, और बताया कि 'पेन मेडिसिन डष्चै्‌ स-|क्श में आधुनिक सुविधाओं में लगातार बढोत्तरी हो रही है।

डा0 अनुराग अग्रवाल, पेन फिजीसियन, डा0 राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान, ने क्रॉनिक पेन सिन्ड्रोम का आम जनता पर प्रभाव व उसके दुष्परिणामों में बारे में जागरूक किया व इसके इलाज के लिए उपलब्ध मिप्सी तकनीक की विस्तृत जानकारी दी। डा0 अग्रवाल ने बताया कि महिलायें क्रॉनिक पेन से पुरूषों की अपेक्षा अधिक पीड़ित हैं और मिप्सी विधि द्वारा बिना बड़े ऑपरेशन के अधिकांश मरीजों का सफल उपचार किया जाता है।

डा0 शिवानी रस्तोगी, पेन फिजीशियन, डा0 रा0म0लो0आ0सं0, लखनऊ ने हेड, नेक व फेसियल पेन सिन्ड्रोम जैसे कि ट्राइजिमाइनल न्यूरैलिजिया व इसके उपचार के लिए उपलब्ध मिप्सी तकनीकियों की जानकारी दी।

डा0 देवेन्द्र सिंह, पेन फिजीशियन, मैक्स हॉस्पिटल, लखनऊ ने पेन मेडिसिन से सम्बन्धित आधुनिक तकनीकियों की चर्चा की।

डा0 चेतना शमशेरी, पेन फिजीशिन, एस0जी0 पी0जी0 आई0एम0 एस0, लखनऊ ने न्यूरोपैथी सिन्ड्रोम व इसके उपचार के बारे में बताया।

डा0 निकिता अग्रवाल, अपोलो हॉस्पिटल, लखनऊ ने कैंसर के दर्द में पेन मेडिसिन के महत्व का वर्णन किया।

सी0एम0ई0 के अन्त में पैनल डिस्कशन हुआ, जिसमें विभिन्न सुपर स्पेशियलिटी के वरिष्ठ डाक्टरों ने क्रोनिक पेन सिन्ड्रोम जैसे– कमर दर्द, कैंसर पेन, ट्राइजिमाइनल न्यूरालिजिया आदि के सर्वोत्तम व आधुनिक मिप्सी उपचार पर चर्चा की।

कार्यक्रम में प्रो0 भुवन चन्द्र तिवारी, विभागाध्यक्ष कार्डियोलॉजी व मीडिया प्रभारी,प्रो0 मधुप रस्तोगी, विभागाध्यक्ष रेडियेशन आंकोलाजी, डा0 विक्रम सिंह, चिकित्सा अधीक्षक, डा0 शैली महाजन, विभागाध्यक्ष डेन्टल, प्रो0 अमितेश पाठक, पेन फिजीशियन, इंटीग्रल युनिवर्सिटी का सक्रिय योगदान रहा।

प्रमुख बिंदु–

1. हर 5वां भारतीय क्रॉनिक पेन से पीड़ित है।

2. हर तीसरा बुजुर्ग क्रोनिक दर्द से पीड़ित

3. 'पेन मेडिसिन', एनेस्थिसियोलॉजी की एक उभरती हुई सुपर–स्पेशियलिटी, विशेष रूप से विभिन्न क्रोनिक दर्द सिंड्रोम से संबंधित है।

4. एमआईपीएसआई तकनीक बड़ी, खुली सर्जरी की आवश्यकता के बिना न्यूनतम आक्रामक, त्वचा संबंधी उपचार है।

5. डॉ. आरएमएलआईएमएस लखनऊ में पुराने दर्द के रोगियों के लिए कमरा नंबर 35, ओपीडी 2, डॉ. आरएमएलआईएमएस लखनऊ में 'दर्द चिकित्सा ओपीडी' है।

6. पीठ के निचले हिस्से का दर्द दुनिया भर में क्रोनिक दर्द का दूसरा सबसे आम कारण है।

7. 'पेन मेडिसिन ओपीडी' निम्नलिखित बीमारी का ख्याल रखती है–

' पीठ के निचले हिस्से और रीढ़ की हड्डी में दर्द

' घुटने व कूल्हे का दर्द

' ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया और पोस्ट–हर्पेटिक न्यूराल्जिया

' जमे हुए कंधे

' मधुमेह न्यूरोपैथी

' कटिस्नायुशूल

' कैंसर का दर्द

' सरवाइकल दर्द

' सभी क्रोनिक दर्द सिंड्रोम।

काफी उतार चढ़ाव के बीच 46 वर्ष पूरा कर चुका मार्डन बेबी नर्सरी स्कूल समिति

(डॉ अजय तिवारी
जिला संवाददाता)

अयोध्या। वर्ष 1979 में अयोध्या मुख्यालय से करीब 40 किमी दूर तहसील बीकापुर के विकासखण्ड तारुन के जाना बाजार में ग्रामीण दिल में स्कूल समिति के प्रबंधक रमेश चंद्र श्रीवास्तव ने शिक्षा जगत में एक छोटी सी मिशन की शुरुआत किया।उम्मीद का बीज बोया।जिसने अनगिनत जीवन बदल दिए।शिक्षा के प्रति अपने जुनून और सीखने की शक्ति में गहरी आस्था से प्रेरित होकर,उन्होंने उस समय छप्पर में चल रहे छोटे से स्कूल को एक ऐसी जगह पर मॉडर्न बेबी नर्सरी स्कूल समिति की स्थापना की,जहां से पढ़कर निकलने वाले छात्र आईएएस, आईपीएस, आईईएस जैसे सम्मान जनक परीक्षा उत्तीर्ण कर देश के कोने–कोने में पदो पर आसीन होकर इस स्कूल व जिले का नाम रोशन कर रहे हैं।बताते चलें कि उस समय जाना बाजार,एक छोटा गांव,जो किसानों, कारीगरों, और मजदूरों के परिवारों का घर था, वहाँ के बच्चों के पास सीखने के बहुत कम अवसर थे। स्कूल समिति के प्रबंधक श्रीवास्तव ने इसे एक चुनौती और एक पुकार के रूप में देखा।दो छप्परों में कुछ अस्थायी कक्षाओं और समर्पित शिक्षकों की एक मुट्ठी भर टीम के साथ, मॉडर्न बेबी नर्सरी स्कूल की शुरुआत हुई।इसकी विनम्र शुरुआत ने श्री श्रीवास्तव को हतोत्साहित नहीं किया।इसके बजाय उनके दृढ़ संकल्प को मजबूत किया, ताकि जाना बाजार के बच्चों के लिए एक उज्जवल भविष्य का निर्माण किया जा सके।कई वर्षों के दौरान, यह स्कूल गांव के बच्चों के लिए शिक्षा और विकास का एक केंद्र बन गया। जो एक नर्सरी स्कूल के रूप में शुरू हुआ था।वह धीरे–धीरे छात्रों की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए साल–दर–साल विस्तार करता गया।जैसे–जैसे स्कूल का विकास हुआ,यह एक सीबीएसई और यूपी बोर्ड से मान्यता प्राप्त संस्थान बन गया,जो एक व्यापक और विविध पाठ्यक्रम प्रदान करता था।स्कूल ने न केवल शैक्षणिक ज्ञान प्रदान किया बल्कि कौशल आधारित प्रशिक्षण भी दिया, जिससे ग्रामीण युवाओं को विभिन्न व्यवसायों और करियर के लिए तैयार किया गया।मॉडर्न बेबी नर्सरी स्कूल समिति का प्रभाव कक्षा से बहुत आगे तक फैला।इसने 25,000 से अधिक छात्र–छात्राओं को सशक्त बनाया, जो किसान और कारीगर परिवारों से थे, जिनमें से कई अपने परिवार में औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने वाले पहले थे।स्कूल ने प्रतिभाओं को पोषित किया और नई संभावनाओं के द्वार खोले, गरीबी और सीमित अवसरों की जंजीरों को तोड़ दिया, जिन्होंने लंबे समय से जाना बाजार के लोगों को पीछे रखा था।श्री श्रीवास्तव के दूरदर्शी नेतृत्व में, स्कूल क्षेत्र में आशा और प्रगति का प्रतीक बन गया।दशकों में, स्कूल ने एक उल्लेखनीय संख्या में पेशेवरों को तैयार किया है कृ जैसे कि आईएएस अधिकारी, पीसीएस अधिकारी, शिक्षक, डॉक्टर, इंजीनियर, और कई अन्य। ये सफलता की कहानियां न केवल स्कूल की उत्कृष्टता के प्रति समर्पण का प्रमाण हैं, बल्कि शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति का भी सबूत हैं। स्कूल ने जानाबाजार के बच्चों को बड़े सपने देखाने का आत्मविश्वास और उन्हें हासिल करने के साधन दिए। श्री श्रीवास्तव की मॉडर्न बेबी नर्सरी स्कूल समिति की दृष्टि कभी भी पारंपरिक अर्थों में शिक्षा तक सीमित नहीं थी। उनका विश्वास था कि ऐसे कौशल सिखाए जाएं जो ग्रामीण युवाओं को अपने और अपने परिवारों के लिए बेहतर जीवन बनाने में सक्षम बनाएं। स्कूल ने कृषि, हस्तशिल्प, और अन्य स्थानीय उद्योगों में प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए, जिससे छात्रों को व्यावहारिक कौशल प्राप्त करने में मदद मिली, जो उनकी समुदाय की जरूरतों से सीधे जुड़े थे।जिसका नतीजा यह है कि आज, मॉडर्न बेबी नर्सरी स्कूल समिति दृढ़ता, संकल्प, और उम्मीद का प्रतीक बनकर खड़ी है। जो एक छोटे से गांव में एक छोटा स्कूल था, वह एक फलते–फूलते संस्थान में बदल गया है, जिसने हजारों जिंदगियों की दिशा बदल दी है। यह स्कूल भविष्य की पीढ़ियों को प्रेरित करना जारी रखता है, यह साबित करते हुए कि दूरदर्शिता, कड़ी मेहनत, और अटूट समर्पण के साथ, सबसे विनम्र शुरुआत भी असाधारण सफलता की ओर ले जा सकती है।श्री श्रीवास्तव की विरासत उन छात्रों, शिक्षकों, और परिवारों के दिलों में जीवित है, जिन्होंने मॉडर्न बेबी नर्सरी स्कूल समिति के द्वार से होकर कदम रखा है।

संक्षिप्त खबरें

युवक का फंदे से लटकता मिला रक्तरंजित शव

उन्नाव, संवाददाता। कानपुर–लखनऊ हाईवे पर नवीनमंडी पुल पर डिवाइडर पर लगे स्ट्रीट लाइट के खंभे में युवक का शव फंदे से लटका मिला। आसपास के लोगों ने बताया कि युवक रात में खंभे पर सिर पटक रहा था। पुलिस घटना को संदिग्ध मान रही है। कानपुर–लखनऊ हाईवे पर नवीन मंडी पुल पर लगे स्ट्रीट लाइट के खंभे में बुधवार सुबह करीब छह बजे 40 वर्षीय युवक का शव नायलॉन की रस्सी के फंदे से लटका मिला। सिर से खून बहने के साथ अन्य अंगों में भी खून लगा था। सूचना पर पहुंचे दही थाना अध्यक्ष संजीव कुशवाहा और सदर कोतवाली से अपराध निरीक्षक मौके पर पहुंचे। लोगों ने बताया कि युवक विक्षिप्त अपराध निरीक्षक राजेश यादव ने बताया कि अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। फिलहाल वहां के लोगों के मुताबिक उसने आत्महत्या की है। सड़क पर करते समय ट्रक की चपेट में आने से भी बचा है। शिनाख्त के प्रयास किए जा रहे हैं।

सियार ने तीन पर किया हमला, ग्रामीणों ने पीटकर मार डाला

बाराबंकी, संवाददाता। बाराबंकी जिले में जंगली जानवरों के हमले के दहशत के बीच बुधवार शाम मोहम्मदपुर खाला क्षेत्र में एक सियार के हमले में तीन ग्रामीण घायल हो गए इसके बाद घेराबंदी कर ग्रामीणों ने सियार को मार डाला। कुतुलूपुर गांव के लोगों के अनुसार पप्पू, जितेंद्र की पुत्री मीनू और इसी गांव के राम लखन पर गांव के बाहर सियार ने हमला बोला। तीनों घायलों को एक निजी अस्पताल में ले जाया गया। जिसकी भनक लगने के बाद ग्रामीणों ने सियार को चारों ओर से घेर लिया। शाम को लोगों ने उसे पीट–पीट कर मार डाला। देर रात सूचना मिलने के बाद वन विभाग की टीम मौके की ओर रवाना हुई। मोहम्मदपुर खाला के एसएचओ अनिल कुमार सिंह ने बताया कि लालपुर करौता पुलिस चौकी सामने स्थित कुतलूपर गांव में देर शाम हुई घटना के बाद मौके पर पुलिस पहुंची। तीनों घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हालत खतरे से बाहर है। पुलिस गांव में मौजूद है।

शिक्षिकाओं को स्कूल लेकर जा रही वैन का टायर फटा

सीतापुर, संवाददाता। सीतापुर जिले के कमलापुर थाना क्षेत्र में बृहस्पतिवार सुबह नेशनल हाइवे पर शिक्षिकाओ को स्कूल लेकर जा रही वैन का टायर फट गया। इस हादसे में वैन सवार 7 लोग जख्मी हो गये। सभी को प्राथमिक उपचार के लिए स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया। शिक्षकों के मुताबिक वह सभी लखनऊ से सीतापुर आ रहे थे। इस दौरान सुबह करीब साढ़े सात बजे अचानक वैन का पिछला टायर फट गया। वाहन अनियंत्रित होकर पलट गया। वैन सवार शिक्षिका निधि श्रीवास्तव, श्रेया जायसवाल, विक्रांत कटियार, वागीश सक्सेना व अन्य जख्मी हो गए। पुलिस ने सभी जख्मी शिक्षकों को स्वास्थ्य केंद्र भेजा। जहां सभी का प्राथमिक उपचार कराया जा रहा है।

हरदोई जा रही बस पेड़ से टकराई, 22 घायल

सीतापुर, संवाददाता। यात्रियों को लेकर हरदोई जा रही एक निजी बस बुधवार दोपहर पेड़ से टकरा गई। हादसे में बस में सवार 22 मुसाफिर घायल हो गए। बस को कब्जे में लेकर पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। चालक मौके से भाग गया है। कोतवाली क्षेत्र में हुमायूंपुर गांव के पास सीतापुर जिला मुख्यालय से हरदोई जा रही एक निजी बस अनियंत्रित होकर पेड़ से टकरा गई। हादसे में 22 यात्री घायल हो गए। पुलिस ने सभी घायलों को सीएचसी पहुंचाया, जहां से छह यात्रियों को जिला अस्पताल रेफर किया गया। इंस्पेक्टर शैलेंद्र श्रीवास्तव ने बताया कि तत्काल ही पुलिस बल मौके पर पहुंच गया था। पुलिस वाहनों से घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया। सभी को गंभीर चोटें नहीं आईं हैं।

टूट गए बस के शीशे

यात्रियों के मुताबिक पेड़ से टकराने के बाद चालक के सामने का बस का शीशा पूरी तरह टूट गया। कुछ यात्री तेज झटके के साथ बस के फर्श पर आ गिरे। गनीमत रही कि बस पेड़ से टकरा कर रुक गई। वरना हादसा बड़ा हो सकता था।

मेन लाइन में फाल्ट से आठ घंटे गुल रही 15 गांवों की बिजली

औरैया, संवाददाता। असेनी फीडर से जुड़े बिहारीपुर उपकेंद्र में आई 33 केवी मेन लाइन में फाल्ट से कंचौसी कस्बा समेत 15 गांवों की 10 घंटे बिजली आपूर्ति बाधित रही। जानकारी होने पर बिजली कर्मचारियों ने कड़ी मशक्कत कर समस्या दूर की। बुधवार सुबह छह बजे बिहारीपुर उपकेंद्र की मेन लाइन में दिबियापुर के पास फाल्ट हो गया। जिससे जमौली, चंद्रपुर, बिहारीपुर, कंचौसी गांव, चमरौआ, बिनपुरापुर, सहायपुर, प्रसाद पुर्वा, रोशनपुर, ढिकियापुर, घसा पुर्वा सहित 15 गावों की बिजली आपूर्ति ठप रही। बिजली न आने पर लोग सुबह से ही परेशान रहे। विद्युत विभाग की टीम ने फाल्ट खोजने के लिए पेट्रोलिंग शुरू की। दोपहर 2:20 पर फाल्ट ठीक कराते हुए विद्युत सप्लाई बहाल हो सकी। ग्रामीणों ने बताया कि आए दिन फॉल्ट होने से बिजली आपूर्ति घंटों बाधित रहती है। विभाग के अधिकारियों से कई बार शिकायत की गई, लेकिन कोई सुनवाई नहीं होती हैं। दिबियापुर के पास मैन लाइन में फाल्ट होने की वजह से बिजली आपूर्ति बाधित हो गई थी।

मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने किया शिक्षकों को सम्मानित

ब्यूरो चीफ आर एल पांडेय

लखनऊ। शिक्षक अपने ज्ञान और विद्या के माध्यम से विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की नींव रखते हैं, जिससे छात्र अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त कर पाते हैं। इसी विचार को व्यक्त करते हुए प्रदेश के व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमशीलता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कपिल देव अग्रवाल ने शुक्रवार को लखनऊ स्थित टेक्नो ग्रुप ऑफ इंस्टीटूशन्स में आयोजित शिक्षक सम्मान समारोह में शिक्षकों को सम्मानित किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने शिक्षकों के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षक समाज के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनकी मेहनत और समर्पण से ही समाज में शिक्षित और सक्षम नागरिक तैयार होते हैं, जो देश के भविष्य को आकार देते हैं। मंत्री ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में योगदान देने वाले शिक्षक समाज के

सच्चे मार्गदर्शक होते हैं । कपिल देव अग्रवाल ने अपने संबोधन में कहा कि आज के समय में शिक्षा में नवाचार की अत्यंत आवश्यकता है। शिक्षक न केवल पाठ्यक्रम तक सीमित रहें, बल्कि छात्रों को नए कौशल, आधुनिक तकनीकों और व्यावसायिक दक्षताओं से भी परिचित कराएं, जिससे वे भविष्य की चुनौतियों का सामना कर सकें और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। कार्यक्रम के अंत में मंत्री ने सभी शिक्षकों और सम्मानित व्यक्तियों का आभार व्यक्त किया और शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर सहयोग और समर्पण के लिए उन्हें प्रेरित किया। इस प्रकार के कार्यक्रम समाज में शिक्षकों की महत्ता को रेखांकित करते हैं और नई पीढ़ी को गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करने के उनके प्रयासों को प्रोत्साहित करते हैं। समारोह में सरस्वती विद्या मंदिर के विभिन्न शाखाओं के आचार्यों को उनकी सेवा और उत्कृष्ट शिक्षण कार्य के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया गया। सम्मानित शिक्षकों में रमेश चन्द्र वर्मा, उमेश चन्द्र मिश्र, वेदिका त्रिपाठी, राकेश चंद्र द्विवेदी, बद्री विशाल, दिनेश कुमार वर्मा और राजेश कुमार शुक्ल शामिल थे। इस अवसर पर टेक्नो कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. सीमा वली, रजिस्ट्रार विजय आनंद तिवारी और विभिन्न विभागों के प्रमुख शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया।

विज्ञान विभाग से अभिषेक द्विवेदी, ललित कला विभाग से मोहन वर्मा, कंप्यूटर विज्ञान विभाग से आशीष निगम, शिक्षा विभाग से ध्रुव कुमार सिंह, वाणिज्य विभाग से डॉ. अरुण शर्मा और पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग से डॉ. विनय कुमार को उनके उत्कृष्ट शिक्षण और संस्थान के विकास में योगदान के लिए पुरस्कार प्रदान किए गए।

महिला अधिवक्ता की हत्या से आक्रोश, आगरा में किया गया प्रदर्शन

आगरा, संवाददाता। कासगंज में जिला न्यायालय के मुख्य गेट से लापता हुई महिला अधिवक्ता मोहिनी तोमर की हत्या से दीवानी के अधिवक्ताओं में आक्रोश है। बृहस्पतिवार को विभिन्न बार एसोसिएशन ने बैठक कर प्रदर्शन किया। कहा कि अधिवक्ता सुरक्षा अधिनियम लागू किया जाए। जल्द गिरफ्तारी हो। परिवार को 50 लाख मुआवजा दिलाया जाए। ऐसा न हुआ तो अधिवक्ता आंदोलन करेंगे। एमजी रोड स्थित भारत माता की प्रतिमा पर सेशन कोर्ट के अधिवक्ताओं ने प्रदर्शन किया। महिला अधिवक्ता सरोज यादव ने कहा कि प्रदेशभर में वकीलों पर जानलेवा हमले हो रहे हैं। टारगेट कर कई अधिवक्ताओं की हत्या कर दी गई। इसके बाद भी शासन, प्रशासन और सरकार मूकदर्शक बनी है। इस दौरान वरिष्ठ अधिवक्ता राजीव कुमार सिंह, कश्मीर सिंह यादव, सुनीता सिंह, दिनेश यादव, सरोज यादव, साइना खान, मेघ सिंह यादव मौजूद रहे। यूनाइटेड बार एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने दीवानी में बैठक कर आक्रोश जताया। सचिव अनूप कुमार शर्मा ने कहा कि जल्द दोषियों की गिरफ्तारी कर अधिवक्ता सुरक्षा अधिनियम लागू किया जाए। अन्यथा अधिवक्ता एक होकर आंदोलन करेंगे। इस दौरान अध्यक्ष नरेश शर्मा, प्रमोद लवानियां, अखिल खंडेलवाल, माला गुप्ता व अन्य अधिवक्ता मौजूद रहे।

सरकार 50 लाख रुपये मुआवजा दे

उच्च न्यायालय खंडपीठ स्थापना संघर्ष समिति ने आगरा बार एसोसिएशन के सभागार में बैठक कर रोष जताया। शोक संवेदना भी व्यक्त की। अध्यक्षता अरुण कुमार सोलंकी और सुभाष बाबू परमार ने की। गिरफ्तारी नहीं होने पर न्यायिक कार्य से व्रत रहने की चेतावनी दी। कहा कि प्रदेश सरकार 50 लाख रुपये मुआवजा दे। 11 अधिवक्ताओं का प्रतिनिधिमंडल पीड़ित परिवार से मिलने कासगंज जाएगा।

लंबे समय से मांग, नहीं हो रहा विचार

पश्चिमी उत्तर प्रदेश राज्य निर्माण जनमंच ने भी बैठक की।

जनमंच के अध्यक्ष अजय चौधरी ने कहा कि अधिवक्ता सुरक्षा अधिनियम लागू करने की मांग लंबे समय से की जा रही है। सरकार कोई विचार नहीं कर रही है। 48 घंटे में खुलासा और गिरफ्तारी न होने पर आंदोलन होगा। पवन गुप्ता, सत्येंद्र कुमार, लक्ष्मी लवानियां, श्याम सुंदर, प्रशांत सिंह, खुशी आदि की मौजूदगी रही। वहीं आंबेडकर बार के पदाधिकारियों ने भी बैठक कर आक्रोश व्यक्त किया।

लापता बालक के हत्यारोपी गिरफ्तार

सीतापुर, संवाददाता। सीतापुर जिले के सकरन थाना क्षेत्र के सिरकिंडा गांव निवासी दिव्यांश (11) मंगलवार देर शाम संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गया था। बृहस्पतिवार सुबह पुलिस ने उसके चार हत्यारोपियों को गिरफ्तार किया है। इन लोगों ने बालक की हत्या कर शव नहर में फेंकने की बात कबूली है। वहीं, एक कार भी बरामद की है। परिजनों ने बालक के अपहरण की आशंका जताते हुए गांव निवासी तीन लोगों के विरुद्ध नामजद तहरीर दी थी। पुलिस ने इन्हीं तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इनमें एक नाबालिग भी शामिल है। शव मिलने के बाद परिजन थाने पर हंगामा कर रहे हैं।

नाबालिग भी शामिल

मृतक के चाचा शुभम मिश्रा की तहरीर पर पुलिस ने गुमशुदगी दर्ज की थी। इसी बीच परिजनों के शक के आधार पर तीन लोगों को हिरासत में लेकर कड़ी पूछताछ की गई। तीनों ने बालक को मारकर शव नहर में फेंकने की बात कबूली। इसमें एक नाबालिग भी हिरासत में लिया गया है। आरोपियों अंकुर त्रिवेदी (25) पुनीत शुक्ला (20), रिंकू मिश्रा (22) को गिरफ्तार किया गया है। वहीं, एक नबालिग जनपद लखीमपुर निवासी अभिषेक कुमार (17) को भी पुलिस ने हिरासत में लिया है।

शादी का झांसा देकर किशोरी से दुष्कर्म, पांच माह की गर्भवती

उन्नाव, संवाददाता। सोहरामऊ क्षेत्र के एक गांव निवासी शादीशुदा युवक किशोरी को शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करता रहा। पेट दर्द होने पर परिजनों ने अल्ट्रासाउंड कराया कराया तो पांच माह की गर्भवती होने की पुष्टि हुई। पीड़िता की मां की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है। सोहरामऊ थानाक्षेत्र के एक गांव निवासी अनुसूचित जाति के शादीशुदा युवक आयुष रावत बिरादरी की 17 साल की किशोरी को शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करता रहा। किशोरी के गर्भवती होने से दोनों के परिजन अनजान रहे। किशोरी की मां ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि किशोरी को लगातार पेट दर्द होने पर डॉक्टर को दिखाया तो उन्होंने अल्ट्रासाउंड की सलाह दी। अल्ट्रासाउंड कराने पर किशोरी के पांच माह की गर्भवती होने की पुष्टि हुई। वह आरोपी युवक के घर शिकायत लेकर पहुंची और शादी करने का दबाव बनाया तो आरोपी और उसके परिवार के लोगों ने जान से मारने की धमकी देकर भगा दिया। बुधवार को पीड़िता की मां, नाबालिग बेटी के लेकर सोहरामऊ थाने पहुंची और तहरीर दी। पीड़िता की मां ने बताया कि एक राजनीतिक दल से जुड़े व्यक्ति ने दोनों पक्षों में समझौता कराने व पांच लाख रुपये दिलाने की भी पेशकश की, लेकिन वे इसके लिए तैयार नहीं हुए। मामला बढ़ता देख पुलिस ने तहरीर के आधार पर रिपोर्ट दर्ज की। थानाध्यक्ष शरद कुमार ने बताया कि पीड़िता की मां की तहरीर पर युवक के खिलाफ पॉक्सो, जानमाल की धमकी देने सहित गंभीर धाराओं में रिपोर्ट दर्ज की गई है। आरोपी की गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैं।

पुरानी जेसीबी बेचने का झांसा देकर 20 लाख रुपये की ठगी

कानपुर, संवाददाता। हनुमंत विहार क्षेत्र निवासी स्पेयर पार्ट्स कारोबारी को धोखेबाज ने पुरानी जेसीबी बेचने का झांसा देकर 20 लाख रुपये खाते में ट्रांसफर करा लिए। बाद में जेसीबी बेचने से मना कर दिया। रकम वापस करने का दबाव बनाने पर चेक दे दी, जो बाउंस हो गई। पीड़ित कारोबारी ने थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई है। वंशीविहार निवासी अजब सिंह राजपूत ने बताया कि वह पुरानी जेसीबी की खरीद फरोख्त व स्पेयर पार्ट्स बेचने का कारोबार करते हैं। बीते 22 फरवरी को सुल्तानपुर जिले के पतजूपहाड़पुर निवासी हेमकर सिंह ने फोन कर स्पेयर पार्ट्स लेने की बात कही। दुकान बंद होने पर उन्होंने हेमकर को घर पर बुलाया। उसने बताया कि वह पुरानी जेसीबी बेचना चाहता है, जिस पर 20.50 लाख रुपये में सौदा तय हुआ। आरोप है कि हेमकर ने जेसीबी पर लोन होने की बात कहकर कई बार में खातों में 20 लाख रुपये ले लिए। बताया कि कुछ समय बाद आरोपी जेसीबी बेचने की बात से मुकर गया। रुपये वापस करने का दबाव बनाने पर चेक दी, जो बाउंस हो गई। थाना प्रभारी उदय प्रताप सिंह ने बताया कि धोखाधड़ी समेत अन्य धाराओं में रिपोर्ट दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है।

सान्ध्य हिन्दी दैनिक देश की उपासना

स्वात्वाधिकारी में. प्रभुदयाल प्रकाशन की ओर से श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक
श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव
मो0 – 7007415808, 9628325542, 9415034002
RNI NO - UPHIN/2022/86937
Email - deshkiupasanadailynews@gmail.com

समाचार–पत्र से संबधित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायालय होगा।